कड़वे प्रवचन

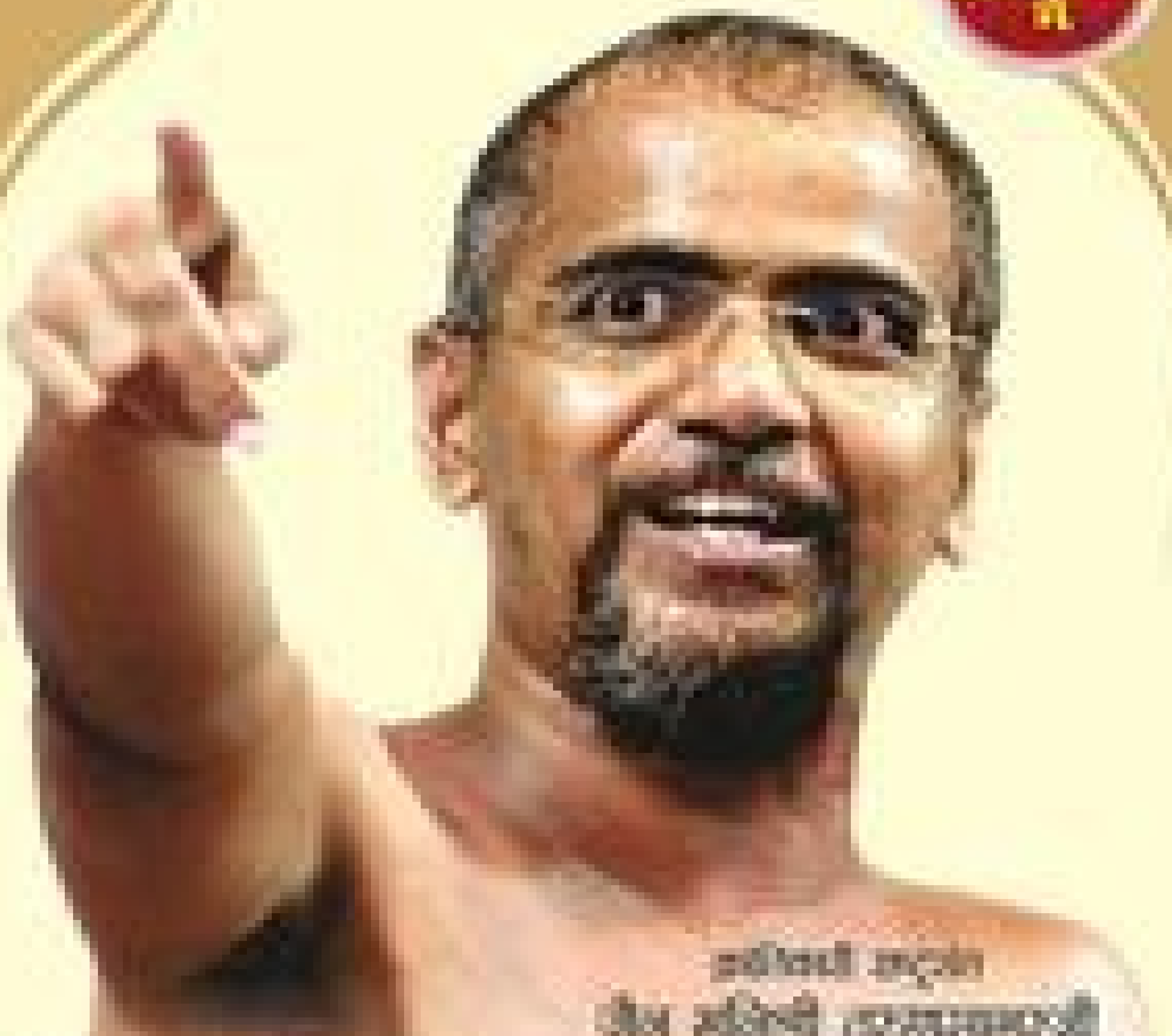

कड़वे प्रवचन

देश दुनिया में अपने 'कड़वे-प्रवचनों' के लिए विख्यात क्रांतिकारी राष्ट्रसंत जैनमुनिश्री तरुणसागरजी की नसीहतें

मुनिश्री के 2004 से 2014 तक गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, छत्तीसगढ़,
मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा व दिल्ली
प्रवास के दौरान सत्संगों में प्रदत्त कड़वे-प्रवचन।
बहुचर्चित पुस्तक 'कड़वे-प्रवचन' के
भागों के स्वर्णिम सूत्रों का
अपूर्व संकलन।

डायमंड बुक्स

eISBN: 978-81-2881-903-2

© लेखकाधीन

प्रकाशक : डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
फोनः 011-41611861
फैक्सः 011-41611866
ई-मेलः: ebooks@dpb.in
वेबसाइटः: www.diamondbook.in
संस्करणः : 2014

KADVE PRAVACHAN

By - *Dr. Jainmunishri Tarunsagar*

भूमिका

मुनिश्री तरुणसागर सदियों तक याद किए जाएंगे

क्रांतिकारी राष्ट्रसंत मुनिश्री तरुणसागर जी के विचारों से बनी यह कति 'कड़वे प्रवचन' को प्रस्तुत करते हुए भीतर से मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

मुनिश्री तरुणसागर कौन है? एक जैन संत जिसने भगवान महावीर को चौराहे पर लाने का शंखनाद करके हलचल मचा दी या एक ऐसे संत जिनके प्रवचनों में जैन से कई गुना ज्यादा अजैन उमड़ते हैं और उनको राष्ट्रसंत की पदवी दे देते हैं। एक महान वक्ता, जिनकी वाणी से कभी आग तो कभी शीतलता बरसती है और सीधा हृदय को छूती है। कोई चमत्कारी महापुरुष, जिनका सान्निध्य लेने के लिए शीर्ष राजनीतिज्ञ और कलाकार खिंचे चले आते हैं या एक ऐसे व्यक्ति जिनका जन्म ही गिनीज विश्व रिकार्ड और लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड जैसे कीर्तिमान बनाने हेतु हुआ है। कौन है मुनिश्री तरुणसागर, ये समझने में उम्र निकल जाएगी।

मेरा परिचय मुनिश्री से उनके छत्तीसगढ़ प्रवास के दौरान एक लेखक और मोटिवेशनल स्पीकर के रूप में हुआ। तब तक मेरी छः बेस्टसेलर कृतियां 12 भाषाओं में प्रकाशित हो चुकीं थीं और लाखों लोग मेरे सेमिनारों में हिस्सा ले चुके थे। सच कहूं तो संतों के पास आना-जाना मेरा न के बराबर था, लेकिन मुनिश्री में कुछ खास बात थी। उनके छत्तीसगढ़ प्रवास के दौरान मैं उनको सुनने गया। विशाल स्टेज, 25-30 हजार श्रोताओं की भीड़, राजकीय अतिथि होने का ताम-झाम जैसी चीजों से मैं चौंक गया। मन में आया कि कुछ तो बात है। फिर जो स्टेज पर आवाज गरजना शुरू हुई तो तालियों ने रुकने का नाम नहीं लिया। मैं चारों तरफ देख रहा था। बच्चे, युवा, बुजुर्ग, जैन, अजैन, समृद्ध, हर आदमी कभी तालियां बजाता तो कभी सर झुकाता, तो कभी उद्वेलित होता। उस दिन की जबरदस्त यादें लेकर मैं लौट आया।

फिर मुनिश्री के साथ बहुत वक्त बिताने का सौभाग्य मिला। मैंने मुनिश्री के साथ छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के निवास पर कुछ समय बिताया। जितना मुनिश्री के करीब आया, उतना ही और ज्यादा प्रभावित हुआ। कम उम्र में दीक्षा ग्रहण करने के कारण स्कूली शिक्षा भी ठीक से नहीं हो पाई, लेकिन अक्सर वो ऐसी बात बोल जाते हैं कि किसी कॉलेज के प्रोफेसर की डिग्रियां

भी उनके ज्ञान के आगे, फीकी पड़ जाती हैं। मैं अक्सर उनसे कहता हूं कि आप कई एमबीए धारियों पर अकेले भारी हैं। वो जब किसी कार्यक्रम की योजना बनाते हैं तो उनकी प्लानिंग, प्रबंधन क्षमता और विजन देखकर आपको लगेगा मानो कि किसी विख्यात मल्टीनेशनल कंपनी का सीइओ तैयारी कर रहा हो। मुनिश्री तरुणसागर कोई छोटा सपना देख ही नहीं सकते है। वो हाथ भी लगा देंगे तो कार्य अपने आप शिखर पर पहुंच जाएगा। कम शब्दों में दमदार बात कहना और भीतर तक झंझोड़ कर रख देना, यह कला मुनिश्री के रोम-रोम में भरी है।

उनके प्रशंसकों ने उनके नाम पर तरुण क्रांति पुरस्कार की स्थापना की और मुझे राष्ट्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी। गत चार वर्षों में यह पुरस्कार डॉ. किरण बेदी, पूज्य बाबा रामदेव जी, श्रीमती मेनका गांधी, पूज्य श्री प्रणव पंडया जी, श्री रमेश चंद्र जी अग्रवाल, श्री गुलाब कोठारी जी, श्री वीरेन्द्र हेगड़े जी, श्री शांतिलाल जी मुथा जी जैसी भारत की दिग्गज हस्तियों को दिया जा चुका है। उनका नाम जुड़ा होने से यह पुरस्कार भी शिखर पर पहुंच गया है। ये हस्तियां सिर्फ मुनिश्री की वजह से पुरस्कार लेने अलग -अलग शहरों में स्वयं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित हुई। इन हस्तियों को पुरस्कार देने का सौभाग्य मिलना भी हमारे लिए गर्व की बात थी।

मैं जब उनके साथ बैठता हूं तो हर पल सतर्क रहता हूं। जाने कब कहां से एक अद्भुत विचार या आइडिया उनके मुंह से निकल आए, कोई नहीं जानता। उनके पास बैठने का भी अलग आनंद होता है। कभी बाल सुलभ चंचलता, कभी गंभीर विचारक, कभी समाज सुधारक, कभी दबंग प्रशासक, जाने वो कौन सा रूप दिखा दें, कोई नहीं जानता। बहुत जिद्दी हैं वो, जो ठान लें तो फिर कोई रोक नहीं सकता। इसलिए वो दुनिया के बड़े-से-बड़े काम सोच भी लेते हैं और कर के भी दिखा भी देते हैं।

कभी कोई उनकी कबीर से तुलना करता है तो कोई अरस्तू से। कोई ओशो से तुलना करता है तो कोई किसी और से। मैं किसी से उनकी तुलना नहीं करना चाहता। मैं चाहता हूं कि आने वाला इतिहास उनको क्रांतिकारी संत तरुणसागर के रूप में ही जानें। हर युग में कुछ महान हस्तियां हुईं हैं जिनको सदियों तक याद किया जाएगा। मुनिश्री तरुणसागर इस युग की ऐसी ही एक हस्ती है।

मुनिश्री तरुणसागर की यह क्रांतिकारी पुस्तक कड़वे प्रवचन-2014 में 14 भाषाओं में एक साथ, एक दिन और एक मंच से रिलीज हो रही है तो वह क्षण भारत के प्रकाशकीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षर में दर्ज होगा।

मैं सभी पाठकों से कहना चाहता हूं कि इस कृति में दिया गया हर विचार एक शास्त्र है। मुनिश्री के विचारों को धीरे-धीरे पढ़े, ज़िंदगी में उतारें और आगे बढ़ें। हर विचार में इतनी ताकत है कि वह आपका जीवन बदल सकता है। यह पुस्तक आपको उद्वेलित करके जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के शिखर पर पहुंचने में मदद करें, यह मेरी मंगल कामना है।

मुनिश्री तरुणसागर जी को शत-शत नमन के साथ....

– डॉ. उज्जवल पाटनी
अंतर्राष्ट्रीय ट्रेनर एवं मोटिवेशनल स्पीकर
सफल वक्ता सफल व्यक्ति, पावर थिंकिंग
और जीत या हार के प्रख्यात लेखक
www.ujjwalpatni.com
training@ujjwalpatni.com

दो शब्द

मुनिश्री तरुणसागर जी जैन परम्परा के सुप्रसिद्ध मुनि है। मुनिश्री की स्वीकार्यता सिर्फ जैनियों में नहीं, वरन इतर जाति और धर्म के लोगों में भी है। वे साधारण संत नहीं है, बड़े ही विद्रोही और क्रांतिकारी संत हैं परम्परागत रूढ़िगत, दकियानूसी उनका व्यक्तित्व नहीं है। वे आग्नेय हैं, अग्नि जैसे प्रज्वलित हैं।

समाज के अक्स और नक्श को बदलने के लिए मुनिश्री तरुणसागरजी जैसे शख्स की जरूरत है, जो उसे लक्स की तरह धोकर साफ स्वच्छ कर सके।

'कड़वे-प्रवचन' का एक-एक सूत्र हीरो से भी तौलो तो वजनी है। 'कड़वे- प्रवचन' के सूत्र इतने धारदार हैं कि सीधे कलेजे में धंसते जाते हैं। हल्के-फुल्के और चुलबुले अंदाज में लिखे गये ये सूत्र विकृतियों और विद्रूपताओं की बखिया उधेड़ कर रख देते हैं। विचारों में पैनापन है, भाषा में उनके व्यक्तित्व जैसा ही बिंदासपन हैं, कहने को ये 'कड़वे-प्रवचन' है, मगर मेरा यह मानना है कि इनमें अद्भुत मिठास है। मुनिश्री की वाणी में जितना माधुर्य है, अन्यत्र दुर्लभ है। यह मेरा खुद का अनुभव है। मैं पिछले कई वर्षों से मुनिश्री की सेवा में हूँ। उनकी मुझ पर बड़ी कृपा रही है।

'कड़वे-प्रवचन' का यह विशिष्ट भाग है। इसमें मुनिश्री द्वारा गत वर्षों में अपने प्रवास के दौरान दिए गए प्रवचनों का सार-संग्रह हैं। कड़वे-प्रवचन की लोकप्रियता का अंदाज आप इसी बात से लगा सकते हैं कि इसका कई भाषा में अनुवाद हो चुका है और वह पूरे देश में पढ़ी जा रही है।

इस पुस्तक को पढ़ते समय बस इतना ख्याल रखना है कि दवाई और सच्चाई हमेशा कड़वी होती है। हमारी कोशिश यही होनी चाहिए कि मुनिश्री के विचार जिगर-जिगर और घर-घर तक पहुंचे, इसी मंगल कामना के साथ।

– रमेशचंद्र अग्रवाल
चेयरमैन, दैनिक भास्कर ग्रुप

शुभकामना और शुभाशीष

श्रमण संस्कृति में आध्यात्मिक अनुश्रुति से सम्पन्न अनेक संत हुए जिन्होंने युग को प्रभावित किया, जैसे आचार्य पुष्पदंत, आचार्य भूतबली, आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य समंतभद्र। ये जैन परम्परा में सर्वोच्च चिन्तक माने जाते हैं, आज उसी परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए मुनिश्री तरुणसागर प्रयत्नशील हैं।

मुनि तरुणसागरजी के चिन्तन-मनन से कोई भी विषय अछूता नहीं है चाहे आदर्श गृहस्थाश्रम, ऐहिक समृद्धि, देश की व्यवस्था, लोक हितकारी राज्य शासन-प्रशासन, शिक्षा कैसी हो? आदि जैसे गूढ़ विषयों को मधुर चिन्तन की चाशनी में डुबोकर जन-जन तक पहुंचा रहे हैं। युग परिवर्तन और बदलते हुए अंतर्राष्ट्रीय परिवेश को शिक्षा देने में, समझाने में तरुणसागर जी प्रेरक सिद्ध हुए हैं। सम-सामयिक पीढ़ी को संबोधन करने में, उनका प्रतिनिधित्व करने में तरुणसागर जी की क्षमता अद्वितीय है।

इस पृथ्वी पर एक साधक को मिठास का साधन मिलता है तो सबको उस स्वाद की प्यास पैदा होने लगती है। एक साधक में ज्ञान का प्रकाश होता है तो असंख्य लोगों के जीवन में उसकी किरणें उतरने लगती हैं। यही कारण है उसका आलोक विश्व को कोने-कोने तक पहुंचा रहा है और उस प्रवचनामृत का रसपान करने वाले क्या राजनेता, क्या संत, क्या पंडित, क्या ज्ञानी, क्या पादरी उन सबका एक वैश्विक समारोह बन गया है, जो आज साम्प्रदायिक कटुता भुलाकर उस 'कड़वे प्रवचन' की मिठास लेने जा रहे हैं।

आखिर क्या है उस 'कड़वे प्रवचन' में? एक-एक शब्द में अंगारे छिपे हैं, इसलिए 'कड़वे प्रवचन' हैं। आग में जलन है, लेकिन प्रकाश्य भी है, पकाने का सामर्थ्य भी है। जरा-सी चिंगारी तुम्हारे जीवन में गिरे तो तुम भी भभक उठ सकते हो और व्यर्थ को जलाकर परमात्मा को निखार सकते हो। ऐसी टकराहट से ज्योति का जन्म होता है। समय और संस्कृति के बीच में भटकती मानवता के पित्त-ज्वर को निकालने के लिए 'कड़वे प्रवचन' की औषधि आवश्यक है।

प्रस्तुत पुस्तक का एक भाग कुछ वर्षों पूर्व प्रकाशित हुआ था, जिसे पूरे देश में सराहा गया और डेढ़ वर्ष की अल्पावधि में ही जिसकी लाखों प्रतियों की रिकार्ड बिक्री हुई। यह जैन इतिहास में विश्व रिकार्ड है। यह 'कड़वे प्रवचन' का यह समग्र भाग है, यही विकास का लक्षण है। हर नया सूरज नए विकास का साक्षी बनकर मन-आंगन में उदित होता हैं 'कड़वे प्रवचन' का सूरज आपके नेत्र-उन्मूलन में सहायक होगा। यही शुभकामना और शुभाशीष है।

– आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी

दिगम्बर मुनि : एक परिचय

मुनिश्री तरुणसागरजी दिगम्बर जैन मुनि हैं। दिगम्बर शब्द का अर्थ होता है, दिग +अम्बर अर्थात् दिशाएं ही जिनके वस्त्र हैं। दिगम्बर मुनि होना कोई बच्चों का खेल नहीं है। यह आश्चर्य है। केवल वस्त्र छोड़ देने और नग्न हो जाने से कोई दिगम्बर मुनि नहीं हो जाता। दिगम्बर मुनि होने के लिए हर साधक को 28 महासंकल्पों से गुजरना पड़ता है, जिन्हें जैन धर्म में मुनि के 28 मूल गुण कहे जाते हैं। जैन मुनि आचरण से जीवंत देवता हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन इतना अधिक तप, त्याग और साधनापूर्ण है, जिसकी कोई कल्पना नहीं नहीं कर सकता।

आपको नहीं पता होगा कि एक दिगम्बर मुनि 24 घंटे में केवल एक बार अन्न-जल ग्रहण करता है, वह भी खड़े-खड़े, अपनी दोनों अंजुली का 'करपात्र' बनाकर। इसके बाद वह कैसी भी स्थिति आये तब भी पानी की एक बूंद भी ग्रहण नहीं करता। सोचिए भीषण गर्मी के दिनों में जब हमें आपको हर दस मिनट में प्यास लगती है तब दिगम्बर मुनि दो-दो घंटे प्रवचन में बोलकर 20-20 किमी., पद विहार करके भी अपने इस संकल्प को निभाता है। कितनी कठिन साधना है।

इतना ही नहीं, वह अपने बालों को किसी सैलून में जाकर नहीं कटवाता है, बल्कि हर चार माह में अपने सिर, दाढ़ी और मूंछ के बालों को हाथों से उखाड़कर फेंकता है। इसे जैन शास्त्रों में 'केशलोंच' कहते हैं। जरा आप अपने चार बाल उखाड़कर देखिए तो समझ में आ जाएगा कि दिगम्बर मुनि की साधना कितनी कठिन है। सारी ज़िंदगी पद विहार करना, हाड़ कंपा देने वाली ठंड हो या भीषण गर्मी हमेशा ही नग्न रहना, मन और इन्द्रियों को जीतकर बालकवत् निर्विकार बनना, कभी भी स्नान नहीं करना, दंत मंजन नहीं करना (वह भोजन के समय ही एक बार मुख में पानी देते हैं) अखंड ब्रह्मचर्य व्रत पालना, रात्रि में मौन रखना, अपने पास पिच्छी (मयूरपंखी), कमंडल और शास्त्र इन तीनों चीजों (उपकरणों) के अलावा और कुछ भी नहीं रहना, आदि उनके नियम होते हैं, जिसे देखकर / सुनकर आदमी को विश्वास होना ही मुश्किल है। बंधुओं! दिगम्बर मुनि केवल नग्न ही नहीं होता, बल्कि उनके जीवन को देखने के बाद आपको भी लगेगा कि दिगम्बर मुनि जैसी साधना दुनिया में किसी के पास नहीं है।

दिगम्बर मुनि का जीवन कितना कठिन है, इस बात का अंदाज आप इसी बात से लगा लें कि हिन्दुस्तान में करीब 1 करोड़ जैन हैं, उनमें सिर्फ 500 दिगम्बर मुनि हैं। क्रान्तिकारी राष्ट्रसंत मुनिश्री तरुणसागर जी ने 13 वर्ष की सुकुमार वय में जैन दीक्षा ली थी, तभी से उपर्युक्त सभी नियमों का पालन कर रहे हैं और दुनिया को सच्ची राह बता रहे हैं। है ना आश्चर्य!

मैं एक पुस्तक पढ़ रहा था। उसमें लिखा था : घर आए अतिथि को भोजन के लिए पूछा करो। भोजन के लिए नहीं पूछ सकते तो पानी के लिए पूछा करो। पानी के लिए भी नहीं पूछ सकते तो आसन दिया करो। आसन भी नहीं दे सकते तो दो मीठे बोल बोला करो। मीठे बोल भी नहीं बोल सकते तो कम से कम मुस्कराहट तो दिया करो और मुस्कराहट भी नहीं दे सकते तो फिर 'चुल्लू-भर पानी में डूब मरो'।

मां-बाप होने के नाते अपने बच्चे को खूब पढ़ाना-लिखाना और पढ़ा-लिखाकर खूब लायक बनाना। मगर इतना लायक भी मत बना देना कि वह कल तुम्हें ही 'नालायक' समझने लगे। अगर तुमने आज यह भूल की तो कल बुढ़ापे में तुम्हें बहुत रोना-पछताना पड़ेगा। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि कुछ लोग यह भूल ज़िंदगी में कर चुके हैं और वे आज रो रहे हैं। अब पछताने से क्या होगा, जब चिड़िया चुग गई खेत।

बच्चों के झगड़ों में बड़ों को और सास-बहू के झगड़ों में बाप-बेटे को कभी नहीं पड़ना चाहिए। संभव है कि दिन में सास-बहू में कुछ कहा-सुनी हो जाए तो स्वाभाविक है वे इसकी शिकायत रात घर लौटे अपने पति से करेंगी। पतियों को उनकी शिकायत गौर से सुननी चाहिए, सहानुभूति भी दिखानी चाहिए। मगर सुबह जब सोकर उठें तो 'आगे पाठ-पीछे सपाट' की नीति ही अपनानी चाहिए, तभी घर की एकता कायम रह सकती है।

संसार में अड़चन और परेशानी न आएं। यह कैसे हो सकता है? सप्ताह में एक दिन रविवार का भी तो आयेगा ना। प्रकृति का नियम ही ऐसा है कि ज़िंदगी में जितना सुख-दुःख मिलना है वह मिलता ही है और मिलेगा क्यों नहीं, टेंडर में जो भरोगे वही तो खुलेगा। मीठे के साथ नमकीन ज़रूरी है, तो सुख के साथ दुःख का होना भी लाज़मी है। दुःख बड़े काम की चीज है। ज़िंदगी में अगर दुःख न हो तो कोई प्रभु को याद ही न करे।

प्रश्न पूछा है : स्वर्ग मेरी मुट्ठी में हो-इसके लिए मैं क्या करूं? कुछ मत करो। बस इतना ही करो कि दिमाग को 'ठंडा' रखो, जेब को 'गरम' रखो, आंखों में 'शरम' रखो, जुबान को 'नरम' रखो और दिल में 'रहम' रखो। अगर तुम ऐसा कर सके तो फिर तुम्हें किसी स्वर्ग तक जाने की ज़रूरत नहीं है। स्वर्ग खुद तुम तक चलकर आयेगा। विडंबना तो यही है कि हम स्वर्ग तो चाहते हैं, मगर 'स्वर्गीय' होना नहीं चाहते।

भले ही लड़ लेना-झगड़ लेना, पिट जाना-पीट देना, मगर बोलचाल बंद मत करना, क्योंकि बोलचाल के बंद होते ही सुलह के सारे दरवाज़े बंद हो जाते हैं। गुस्सा बुरा नहीं है। गुस्से के बाद आदमी जो वैर पाल लेता है, वह बुरा है। गुस्सा तो बच्चे भी करते हैं, मगर बच्चे वैर नहीं पालते। वे इधर लड़ते-झगड़ते हैं और उधर अगले ही क्षण फिर एक हो जाते हैं। कितना अच्छा रहे कि हर कोई बच्चा ही रहे।

दुनिया में रहते हुए दो चीजों को कभी नहीं भूलना चाहिए। न भूलने वाली चीज- एक तो परमात्मा तथा दूसरी अपनी मौत। भूलने वाली दो बातों में से एक है- तुमने किसी का भला किया तो उसे तुरन्त भूल जाओ और दूसरी बात- किसी ने तुम्हारे साथ अगर कभी कुछ बुरा भी कर दिया तो उसे तुरन्त भूल जाओ। बस, दुनिया में ये दो ही बातें याद रखने और भूल जाने जैसी हैं।

मौत दो बातों पर हंसती है। एक तब जब डॉक्टर मरीज को कहता है कि तुम निश्चिंत रहो। मैं हूं ना। दूसरा, तब जब किसी के मरने पर कोई आदमी कहता है, 'बेचारा चल बसा।' बेचारा चल बसा- यह कहने वाला इस अंदाज में कहता है जैसे वह कभी नहीं मरेगा। मौत उसके इस अंदाज पर हंसती है और कहती है- ठीक है बच्चू! तूने उसको 'बेचारा' कहा तो अब तेरा ही नंबर है। यहां कौन है, जो मृत्यु की 'क्यू' में न खड़ा हो?

बुजुर्गों की संगति करो, क्योंकि बुजुर्गों के चेहरे की एक-एक झुर्री पर हज़ार-हज़ार अनुभव लिखे होते हैं। उनके कांपते हुए हाथ, हिलती हुई गर्दन, लड़खड़ाते हुए कदम और मुरझाया हुआ चेहरा संदेश देता है कि जो भी शुभ करना है वह आज, अभी और इसी वक्त कर लो। कल कुछ नहीं कर पाओगे। बूढ़ा इंसान इस पृथ्वी का सबसे बड़ा शिक्षालय है, क्योंकि उसे देखकर उगते सूरज की डूबती कहानी का बोध होता है।

लक्ष्मी पूजा के क़ाबिल तो है, लेकिन भरोसे के काबिल कतई नहीं है। लक्ष्मी की पूजा तो करना, मगर लक्ष्मी पर भरोसा मत करना और भगवान की पूजा भले ही मत करना, लेकिन भगवान पर भरोसा हर-हाल में रखना। दुनिया में भरोसे के क़ाबिल सिर्फ़ भगवान ही हैं। लक्ष्मी का क्या भरोसा? वह तो चंचला है। आज यहां और कल वहां। जिस-जिस ने भी इस पर भरोसा किया, आख़िर में वह रोया है।

कोई मंदिर गिर जाए तो बहुत ज़्यादा घबराने की ज़रूरत नहीं है, कोई मस्जिद टूट जाये तो भी हो-हल्ला मचाने की ज़रूरत नहीं है। मंदिर और मस्जिद तो सैकड़ों बार बनेंगे-टूटेंगे, लेकिन इंसानियत का मंदिर एक बार खण्डित हो गया तो फिर किसी में इतना दम नहीं है कि उसे फिर दुबारा से खड़ा कर सके। क्या मिट्टी की ईंट, चूना और सीमेंट का मूल्य इंसानियत की ईंट, चरित्र का चूना और सत्य के सीमेंट से ज़्यादा हो सकता है?

कुत्ता-कल्चर समाज में तेजी से बढ़ रहा है। पहले लोग गाय पालते थे, अब कुत्ता पालते हैं। एक समय हमारे घर के बाहर लिखा होता था- 'अतिथि देवो भवः'। फिर लिखा जाने लगा-'शुभ-लाभ'। समय आगे बढ़ा तो इसके बाद लिखा गया-'वेलकम' और अब लिखा जाता है- 'कुत्ते से सावधान'। यह सांस्कृतिक पतन है। कुत्ते को रोटी देना, मगर उससे प्रेम मत करना। प्रेम करोगे तो मुंह चाटेगा, लाठी मारोगे तो पैर काटेगा। उसका चाटना और काटना दोनों बुरे हैं।

पसीना बहाना सीखिए। बिना पसीना बहाए जो हासिल होता है, वह पाप की कमाई है। ब्याज मत खाइए। ब्याज पाप की कमाई है, क्योंकि इसमें पसीना नहीं बहाना पड़ता, लेकिन हम बड़े चतुर लोग हैं। आज हमने प्याज खाना तो छोड़ दिया, लेकिन ब्याज खाना जारी है। ब्याज खाना प्याज खाने से भी बड़ा पाप है। पसीने की रोटी खाइए। पाप की कमाई से आप पत्नी को सोने का कंगन तो पहना सकते हैं, मगर यह भी संभव है कि इसके लिए आपको लोहे की हथकड़ियां पहननी पड़ जाएं।

क्रोध का अपना पूरा खानदान है। क्रोध की एक लाड़ली बहन है-जिद। वह हमेशा क्रोध के साथ-साथ रहती है। क्रोध की पत्नी है-हिंसा। वह पीछे छिपी रहती है, लेकिन कभी-कभी आवाज़ सुनकर बाहर आ जाती है। क्रोध के बड़े भाई का नाम है-अहंकार। क्रोध का बाप भी है, जिससे वह डरता है, उसका नाम है-भय। निंदा और चुगली क्रोध की बेटियां हैं। एक मुंह के पास रहेगी तो दूसरी कान के पास। वैर बेटा है। ईर्ष्या इस खानदान की नकचढ़ी बहू है। इस परिवार की पोती है-घृणा। घृणा हमेशा नाक के पास रहती है। नाक-भौं सिकोड़ना काम है इसका। उपेक्षा क्रोध की माँ है।

मैंने ज़िंदगी में एक भी मुर्दे को नहीं फूंका। छोटा था, इस कारण श्मशान जाने का कभी काम नहीं पड़ा। शुरू-शुरू में मुझे इस बात का पश्चाताप रहता था। फिर एक दिन मुझे लगा जैसे भगवान महावीर मुझसे कह रहे हैं : तरुणसागर! तुम्हारा जन्म मुर्दों को फूंकने के लिए नहीं, बल्कि मुर्दों में प्राण फूंकने के लिए हुआ है। और बस! मैं उसी दिन से मुर्दा हो चले व्यक्ति, समाज व देश में प्राण फूंकने के लिए प्राणपण से जुट गया। याद रखें : अधमरा आदमी और अधमरा समाज किसी काम का नहीं।

सुनने की आदत डालो, क्योंकि दुनिया में कहने वालों की कमी नहीं है। कड़वे घूंट पी-पीकर जीने और मुस्कुराने की आदत बना लो, क्योंकि दुनिया में अब अमृत की मात्रा बहुत कम रह गई है। अपनी बुराई सुनने की खुद में हिम्मत पैदा करो, क्योंकि लोग तुम्हारी बुराई करने से बाज नहीं आयेंगे। आलोचक बुरा नहीं है। वह तो ज़िंदगी के लिए साबुन-पानी का काम करता है। ज़िंदगी की फिल्म में एक खलनायक भी तो ज़रूरी है। गली में दो-चार सूअर हों तो गली साफ़ रहती है।

ज़िंदगी में मां, महात्मा और परमात्मा से बढ़कर और कुछ भी नहीं है। जीवन में तीन आशीर्वाद ज़रूरी हैं- बचपन में माँ का, जवानी में महात्मा का और बुढ़ापे में परमात्मा का। माँ बचपन को संभाल देती है, जवानी में नीयत बिगड़े तो उपदेश देकर महात्मा सुधार देता है और बुढ़ापे में मौत बिगड़े तो परमात्मा संभाल लेता है। माँ, महात्मा और परमात्मा ही ज़िंदगी हैं। धर्म, पुराण और इतिहास में से अगर ये तीन शब्द निकाल दें तो वे महज कागज़ों के पुलिंदे मात्र रह जाते हैं।

सत्य का रास्ता कठिन है। इस रास्ते पर हज़ार चलने की सोचते हैं, मगर सौ ही चल पाते हैं, नौ सौ तो सोचकर ही रह जाते हैं और जो सौ चल देते हैं उनमें केवल दस ही पहुंच पाते हैं। नब्बे तो रास्ते में ही भटक जाते हैं और जो दस पहुंचते हैं उनमें भी सिर्फ़ एक ही सत्य को उपलब्ध हो पाता है, नौ फिर भी किनारे पर आकर डूब जाते हैं। तभी तो कहते हैं कि सत्य एक है। और याद रखें : सत्य परेशान तो हो सकता है, लेकिन पराजित नहीं।

आज जैन समाज के सामने अपने को शाकाहारी बनाये रखने की सबसे बड़ी चुनौती है। महावीर के मोक्ष के बाद इन 2500 वर्षों में जैन समाज कई बार बंटा है और वह बंटवारा कभी दिगम्बर जैन- श्वेताम्बर जैन के नाम से तो कभी तेरापंथी जैन-बीसपंथी जैन के नाम से हुआ है मगर अब जो बंटवारा होगा, वह दिगम्बर जैन-श्वेताम्बर जैन, तेरापंथी जैन-बीसपंथी जैन, स्थानकवासी जैन और मंदिरमार्गी जैन जैसे नाम से नहीं होगा, बल्कि 'शाकाहारी जैन' और 'मांसाहारी जैन' के नाम से होगा। अगर ऐसा हुआ तो याद रखना, महावीर हमें कभी क्षमा नहीं करेंगे।

आज विज्ञापन और मार्केटिंग का जमाना है। किसी दुकान का माल कितना ही अच्छा क्यों न हो, यदि उसकी पैकिंग और विज्ञापन आकर्षक न हो तो वह दुकान चलती नहीं है। जैन धर्म के पिछड़ेपन का कारण भी यही है। जैन धर्म के सिद्धांत तो अच्छे हैं, लेकिन उसकी पैकिंग और मार्केटिंग अच्छी नहीं है। अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह जैसे महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों पर आधारित जैन धर्म 'जन-धर्म' बनने की क्षमता रखता है, लेकिन उसका व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार न होने के कारण आज वह पिछड़ गया है।

हिन्दू और मुसलमान इस देश की दो आंखें हैं और ये दोनों कौमें खूब प्यार और मुहब्बत के साथ सदियों से कंधे-से-कंधा और कदम-से-कदम मिलाकर रहती आ रही हैं। साम्प्रदायिकता इस देश के मिज़ाज में नहीं है और हो भी कैसे? जरा गौर फरमाइए कि जब आप Ramzan लिखते हैं तो Ram से शुरुआत करते हैं और जब आप Deewali लिखते हैं तो Ali से समाप्त करते हैं। यों रमजान में बसे राम और दिवाली में छिपे अली हमें मुहब्बत से रहने का पैगाम देते हैं। अगर राम के भक्त और रहीम के बंदे थोड़ी अक्ल से काम लें तो यह मुल्क स्वर्ग से सुंदर है।

श्मशान गांव के बाहर नहीं, बल्कि शहर के बीच चौराहे पर होना चाहिए। श्मशान उस जगह होना चाहिए, जहां से आदमी दिन में दस बार गुजरता है ताकि जब-जब वह वहां से गुजरे तो वहां जलती लाशों और अधजले मुर्दों को देखकर उसे भी अपनी मृत्यु का ख्याल आ जाये और अगर ऐसा हुआ तो दुनिया के 70 फीसदी पाप और अपराध स्वतः खत्म हो जायेंगे। आज का आदमी भूल गया है कि कल उसे मर जाना है। तुम कहते ज़रूर हो कि एक दिन सभी को मर जाना है, पर उन मरने वालों में तुम अपने को कहां गिनते हो?

पशु-मांस का निर्यात देश के अर्थतंत्र का कत्ल करना है। मांस-निर्यात भारत की ऋषि और कृषि की परम्परा के माथे पर एक काला कलंक है। सरकार मांस-निर्यात अविलम्ब बंद करे और यदि इससे उसे कोई घाटा लगता है तो हम संत-मुनि अपने भक्तों से पूरा करवायेंगे। देश से निर्यात ही करना है तो करुणा और अहिंसा का निर्यात करें, दूध और घी का निर्यात करें और यदि संभव न हो तो देश में जितने भी भ्रष्ट नेता हैं, उनका ही निर्यात कर दिया जाये तो यह देश स्वतः ही भ्रष्टाचार से मुक्त हो जाएगा।

भगवान के सामने दीप जलाओ तो इस बात का अहंकार मत करना कि मैंने दीप जलाया। अरे! तुम क्या दीप जलाओगे? भगवान के समक्ष कुदरती दो दीप तो जलते ही रहते हैं। दिन में तो सूरज जलता है और रात में चंद्रमा जलता है। तुम्हारा दीया, सूरज और चांद का मुकाबला तो नहीं कर सकता ना! तो फिर अहंकार क्यों? बस इतना ही विचार करना कि हे प्रभु! मैं नदी के जल से सागर को पूज रहा हूं, दीप से सूरज की आरती उतार रहा हूं। हे प्रभु! तेरा ही तुझको अर्पण कर रहा हूं।

कोई धर्म बुरा नहीं है बल्कि सभी धर्मों में कुछ बुरे लोग ज़रूर हैं, जो अपने स्वार्थों की खातिर धर्म की आड़ में अपने गोरख-धंधे और नापाक इरादे जाहिर करते रहते हैं। अगर हम इन थोड़े से बुरे लोगों के दिलों को बदल सकें, उन्हें सही राह पर चला सकें और नेक इंसान बनाकर जीना सिखा सकें तो यकीनन सच मानिए, यह पूरी पृथ्वी स्वर्ग में तब्दील हो जायेगी। धर्म मरहम नहीं बल्कि टॉनिक है। इसे बाहर मलना नहीं, बल्कि पी जाना है। कितना बड़ा आश्चर्य है धर्म के लिए लड़ेंगे-मरेंगे, लेकिन उसे जीयेंगे नहीं।

धर्म पगड़ी नहीं, जिसे घर से दुकान के लिये चले तो पहन लिया और दुकान पर जाकर उतार कर रख दिया। धर्म तो चमड़ी है, जिसे अपने से अलग नहीं किया जा सकता। धर्म तो आत्मा का स्वभाव है। धर्म के माने प्रेम, करुणा और सद्भावना है। उसका प्रतीक फिर चाहे राम हो या रहीम, बुद्ध हो या महावीर, कृष्ण हो या करीम, सबकी आत्मा में धर्म की एक ही आवाज़ होगी। धर्म दीवार नहीं, द्वार है, लेकिन दीवार जब धर्म बन जाती है तो अन्याय और अत्याचार को खुलकर खेलने का अवसर मिल जाता है। फिर चाहे वह दीवार मंदिर की या मस्जिद की ही क्यों न हो?

दिल्ली का सफ़र करना हो तो कितनी तैयारी करते हो और मौत के लिए? मौत का सफ़र भी बड़ा लम्बा है। इस सफ़र में अंधेरे रास्तों से गुजरना पड़ता है और रास्ते में दाएं-बाएं मुड़ने के न तो कोई निशान होते हैं और न ही किसी मोड़ पर हरी-लाल बत्ती जल रही होती है। इतना ही नहीं; चीख-पुकार करने पर भी कोई सुनने वाला नहीं मिलता। यहां तुम्हारे घर में चाहे अन्न के भंडार भरे पड़े हों, पर वहां सफ़र में आटे की एक 'चुटकी' भी साथ नहीं ले जा सकते। भीषण गर्मी में जान सूखती है, पर नीम का एक पत्ता तक सिर ढकने को नहीं मिलता। संकट की इस घड़ी में सिर्फ भगवान का नाम ही सहारा होता है।

अब संत-मुनियों को अपने प्रवचन साधारण जनता के बीच करने की अपेक्षा लोकसभा और विधानसभाओं में करने चाहिए, क्योंकि खतरनाक लोग वहीं मौजूद हैं। मेरा विश्वास है अगर देश और प्रदेश की राजधानियों में बैठे करीब 90 हजार लोग सुधर जाएं तो देश की सवा अरब जनता अपने-आप और रातों-रात सुधर जायेगी। सुधार की प्रक्रिया नीचे से नहीं, ऊपर से शुरू होनी चाहिए, क्योंकि भ्रष्टाचार की गंगोत्री ऊपर से नीचे की ओर बहती है। अगर ऋषिकेश में गंगा का शुद्धिकरण हो जाये तो हरिद्वार और उसके नीचे के तमाम घाट स्वतः शुद्ध होते चले जायेंगे।

किसी की अर्थी को सड़क से गुजरते हुए देखकर यह मत कहना कि बेचारा चल बसा अपितु उस अर्थी को देखकर सोचना कि एक दिन मेरी अर्थी भी इन्हीं रास्तों से यों ही गुजर जायेगी और लोग सड़क के दोनों ओर खड़े होकर देखते रह जायेंगे। उस अर्थी से अपनी मृत्यु का बोध ले लेना, क्योंकि दूसरों की मौत तुम्हारे लिए एक चुनौती है। अर्थी उठने से पहले जीवन का अर्थ समझ लेना, वरना बड़ा अनर्थ हो जायेगा। वैसे गधे को कभी नहीं लगता कि उसका जीवन व्यर्थ है।

दो बातों का ध्यान रखें। एक, टी.वी. देखते हुए भोजन न करें। दो, अखबार पढ़ते हुए चाय न पियें। आज के जीवन में ये दो जबर्दस्त बुराइयां हैं। आप इन्हें अविलम्ब सुधार लें, क्योंकि जब आप टी.वी. देखते हुए खाना खाते हैं और अखबार पढ़ते हुए चाय पीते हैं तो आप सिर्फ खाना और चाय नहीं खाते-पीते, बल्कि उस टी.वी और अखबार में हिंसा, अश्लीलता और भ्रष्टाचार की खबरें होती हैं, उन्हें भी खा-पी जाते हैं और फिर वे खबरें आपको अपने से बेखबर कर देती हैं। अगर आम आदमी अपनी ये दो आदतें सुधार लें तो पूरे समाज व देश की आबो-हवा बदल सकती है।

जिंदा रहने के लिए भोजन ज़रूरी है। भोजन से भी ज़्यादा पानी ज़रूरी है, पानी से भी ज़्यादा वायु ज़रूरी है और वायु से भी ज़्यादा आयु ज़रूरी है मगर मरने के लिए कुछ भी ज़रूरी नहीं है। आदमी यों ही बैठे-बैठे मर सकता है। आदमी केवल दिमाग की नस फटने और दिल की धड़कन रुकने से नहीं मरता, बल्कि उस दिन भी मर जाता है जिस दिन उसकी उम्मीदें और सपने मर जाते हैं; उसका विश्वास मर जाता है। इस तरह आदमी मरने से पहले भी मर जाता है और फिर मरा हुआ आदमी दोबारा थोड़े न मरता है!

अगर आप बाप हैं तो आपका अपने बेटे के प्रति बस एक ही फर्ज है कि आप अपने बेटे को इतना योग्य बना दें कि वह संत-मुनि और विद्वानों की सभा में सबसे आगे की पंक्ति में बैठने का हकदार बने और अगर आप बेटे हैं तो आपका अपने बाप के प्रति बस यही एक कर्तव्य है कि आप ऐसा आदर्शमय जीवन जिएं, जिसे देखकर दुनिया तुम्हारे बाप से पूछे कि किस तपस्या और पुण्य के फल से तुम्हें ऐसा होनहार बेटा मिला है।

अगर ज़िंदगी को स्वर्ग बनाने की तमन्ना है तो पति और पत्नी, सास और बहू, बाप और बेटे को आपस में यह समझौता करना होगा कि अगर एक आग बने तो दूसरा पानी बन जायेगा। अपने घरों में थोड़े से पानी की व्यवस्था करके रखिए, पता नहीं कब किसके दिल में क्रोध की आग भड़क उठे। क्रोध आग है। अपने घरों में सहनशीलता और शांति का जल तैयार रखिए। पता नहीं, कब तुम्हारा घर क्रोध की लपटों से घिर जाए। ध्यान रखो : पति कभी क्रोध में आग बने तो पत्नी पानी बन जाये और पत्नी कभी अंगार बने तो पति जलधार हो जाये।

कहा जाता है कि बच्चे पर माँ का प्रभाव पड़ता है, लेकिन आज बच्चा माँ से कम, मीडिया से ज़्यादा प्रभावित हो रहा है। कल तक कहा जाता था कि यह बच्चा अपनी माँ पर गया है और यह बाप पर। मगर आज जिस तरह से देशी-विदेशी चैनल हिंसा और अश्लीलता परोस रहे हैं, उसे देखकर लगता है कि कल यह कहा जायेगा कि यह बच्चा जी टीवी पर गया है और यह स्टार टीवी पर और यह जो निखट्टू है न, यह तो पूरी फैशन टीवी पर गया है। आज विभिन्न चैनलों द्वारा देश पर जो सांस्कृतिक हमले हो रहे हैं, वे ओसामा-बिन-लादेन जैसे आतंकवादियों के हमले से भी ज़्यादा खतरनाक हैं।

जवानी पर ज़्यादा मत इतराना, क्योंकि जवानी सिर्फ चार दिनों की है। अतः कानों में बहरापन आवे, इससे पहले ही जो सुनने जैसा है उसे सुन लेना। पैरों में लंगड़ापन आवे, इससे पहले ही दौड़-दौड़ कर तीर्थ-यात्रा कर लेना। आंखों में अंधापन आवे, इससे पहले ही अपने स्वरूप को निहार लेना। वाणी में गूंगापन आवे, इससे पहले ही कुछ मीठे बोल बोल लेना। हाथों में लूलापन आवे, इससे पहले ही दान-पुण्य कर डालना। दिमाग में पागलपन आवे, इससे पहले ही प्रभु के हो जाना।

दुःख बड़ा ढीठ मेहमान है। अगर यह तुम्हारे घर के लिए निकल पड़ा है तो पहुंचेगा ज़रूर। अब अगर तुम इस मेहमान को घर आते हुए देखकर सामने का दरवाजा बंद कर लो तो यह पीछे के दरवाजे से आ जायेगा। पीछे का दरवाजा भी बंद कर लो तो यह खिड़की में से आ जाएगा। खिड़की भी बंद कर लो तो छप्पर फाड़कर, नहीं तो फर्श उखाड़कर आ जाएगा। ढीठ मेहमान है ना! अतः जीवन में सुख की तरह दुःख का भी स्वागत करो। दुःख की मेजबानी के लिए भी तैयार रहो। यह सोचकर कि वे दिन नहीं रहे तो ये दिन भी नहीं रहेंगे।

यदि कोई इंजीनियर भ्रष्ट होता है तो कुछेक पुल, भवन ही असमय में धराशायी होते हैं। यदि कोई डॉक्टर भ्रष्ट होता है तो कुछेक ही लोगों की अकाल-मौत होती है, लेकिन यदि कोई शिक्षक भ्रष्ट होता है तो आने वाली समूची पीढ़ी बर्बाद हो जाती है। देश का भविष्य आज शिक्षक के हाथ में है क्योंकि उसके द्वार पर नई पीढ़ी कुछ सीखने बैठी है। यदि देश के एक करोड़ अस्सी लाख शिक्षक तय कर लें तो 2020 तक भारत को 'विकसित राष्ट्र' क्या 'विश्व राष्ट्र' बना सकते हैं।

पुत्र तुम्हारी सेवा करे तो यह कोई आश्चर्य नहीं। वह तो करेगा ही। क्योंकि वह आखिर तुम्हारा ही खून है। लेकिन यदि पुत्र-वधू सेवा करे तो यह आश्चर्य है। वह खून तो दूर खानदान तक की भी नहीं है; फिर भी सेवा कर रही है तो निश्चित ही यह तुम्हारे किसी जन्म का पुण्य-फल है। आज के समय में और सब तरह के पुण्य भोगना बहुत सारे लोगों की किस्मत में है, लेकिन पुत्र और पुत्र-वधू की सेवा के पुण्य को भोगना विरले ही मां-बाप के भाग्य में है।

पड़ोस धर्म को निभाइए। पड़ोस धर्म क्या है? यही कि आप भोजन अवश्य करें, मगर इस बात का ख्याल रखें कि कहीं आपका पड़ोसी भूखा न रह जाये। अच्छा पड़ोसी आशीर्वाद है, पड़ोसी के साथ कभी बिगाड़ न करें, क्योंकि हम मित्रों के बिना तो जी सकते हैं, लेकिन पड़ोसी के बिना नहीं। पड़ोसी के सुख-दुःख में सहभागी बनिए। कारण कि पड़ोसी के घर में आग लगी है तो समझना तुम्हारी अपनी सम्पत्ति भी खतरे में है। और हां, अगर तुम आज पड़ोसी के यहां नमकीन भेजते हो तो कल वहां से मिठाई ज़रूर आयेगी।

दस गाय दान करना बड़ा पुण्य है। मगर इससे भी बड़ा पुण्य कत्लखाने में जाती हुई एक गाय को बचा लेना है। दस मंदिरों का निर्माण करना बड़ा पुण्य है, मगर इससे भी बड़ा पुण्य एक प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार करना है। दस प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार करना बड़ा पुण्य है, मगर इससे भी बड़ा पुण्य एक आतंकवादी को अहिंसावादी बना देना है। अगर आप अपनी प्रेरणा से एक मांसाहारी व्यक्ति को शाकाहारी बना देते हैं तो समझना आपने घर बैठे ही चार-धाम की यात्रा करने का पुण्य अर्जित कर लिया।

मैं सूरत गया था। वहां एक बुढ़िया ने कहा : मुनिश्री! आपके आने से मुझे परेशानी हो गई। मैंने पूछा : वो कैसे? बुढ़िया बोली : मैं और मेरी बहू रोज सुबह प्रवचन में, तत्त्व चर्चा में और शाम को आनंद-यात्रा में आते हैं। मैंने कहा : यह तो अच्छी बात है; मगर इसमें परेशानी की क्या बात है? बुढ़िया बोली : परेशानी यही है कि जब से आप सूरत आये हैं तब से बहू से झगड़ने तक का समय नहीं मिल रहा है (हंसी)। मैंने कहा : अम्मा! फिर तो मुनि तरुणसागर का सूरत आना और तुम्हारा सत्संग सुनना सार्थक हो गया।

पुत्र चार तरह के होते हैं। एक, लेनदार पुत्र- पिछले जन्म का लेनदार था, पुत्र होकर आ गया। अब उसे पढ़ाओ-लिखाओ, विवाह करो, उसका लेन-देन पूरा होगा और वह चल बसेगा। दो, दुश्मन पुत्र- पिछले जन्म का दुश्मन भी पुत्र होकर आ जाता है। ऐसा पुत्र कदम-कदम पर दुःख देता है। तीन, उदासीन पुत्र- ऐसा पुत्र मां-बाप को ना सुख देता है ना दुःख। बस कहने को पुत्र होता है। चार, सेवक पुत्र- पिछले जन्म में तुमने किसी की सेवा की, वही तुम्हारा पुत्र बनकर आ गया। ऐसा पुत्र मां-बाप को बड़ा सुख देता है।

पैर से अपाहिज एक भिखारी सदा प्रसन्न और खुश रहता था। किसी ने पूछा : अरे भाई! तुम भिखारी हो, लंगड़े भी हो, तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है, फिर भी तुम इतने खुश रहते हो। क्या बात है? वह बोला : बाबूजी! भगवान का शुक्र है कि मैं अंधा नहीं हूं। भले ही मैं चल नहीं सकता, पर देख तो सकता हूं। मुझे जो नहीं मिला- मैं उसके लिए प्रभु से कभी कोई शिकायत नहीं करता बल्कि जो मिला है, उसके लिए धन्यवाद ज़रूर देता हूं। यही है दुःख में से सुख खोजने की कला।

अपनी मेहनत और गाढ़े पसीने की कमाई को अपनी धर्मपत्नी के हाथों में सौंप देना, क्योंकि घर की असली लक्ष्मी तो वही है। जो लक्ष्मी तिजोरी में बैठी है वह तो हमेशा खड़ी है। मगर घर की लक्ष्मी तो जीवन-भर साथ देने वाली है। जो व्यक्ति बाजार की लक्ष्मी (धन-लक्ष्मी) से शराब पीता है और घर आकर गृह-लक्ष्मी का अपमान करता है। उसके साथ गाली-गलौज, मारपीट करता है तो वह ज़िंदगी में दोनों लक्ष्मी से वंचित हो जाता है। उसकी तिजोरी की लक्ष्मी तो सामने के दरवाजे से निकल जाती है और घर की लक्ष्मी पीछे के दरवाजे से चली जाती है।

कुत्ते दो प्रकार के होते हैं। एक पालतू और दूसरा फालतू। जो पालतू कुत्ता होता है उसके गले में एक पट्टा पड़ा होता है। उस पट्टे की वजह से उसे ना तो कोई छेड़ता है, न पकड़ता है और न ही मारता है। मगर जो फालतू कुत्ता होता है उसके गले में कोई पट्टा ना होने की वजह से हर कोई उसे छेड़ता और मारता है। अगर तुमने भी अपने गले में प्रभु नाम और सद्गुरु के आशीर्वाद का पट्टा डाल लिया तो फिर तुम्हें दुनिया की कोई भी आसुरी व तामसिक शक्ति नहीं छेड़ सकती।

किसी ने पूछा : दिगम्बर मुनि के तन पर लंगोट क्यों नहीं है? मैंने कहा : जब मन में कोई खोट होती है, तभी तन पर लंगोट होती है। दिगम्बर मुनि के मन में कोई खोट नहीं है, इसलिए उनके तन पर लंगोट भी नहीं है। वस्त्र तो विकारों को ढकने के लिए होते हैं। जो विकारों से परे हैं, ऐसे शिशु और मुनि को वस्त्रों की क्या ज़रूरत है? दरअसल इस कलयुग में दिगम्बर मुनि होना, आश्चर्यों में आश्चर्य है जो समाज की नग्नता को ढकने के लिए अपने तन के वस्त्र तक उतार पेQंकता है, वही होता है दिगम्बर जैन मुनि।

हर सुबह एक छोटी-सी प्रार्थना ज़रूर करें। कहें- हे प्रभु! मेरे पैर अपंगों के पैर बन जाएं। मेरी आंखें अंधों की आंखें बन जाएं। मेरे हाथ बेसहारों के लिए सहारे बन जाएं। दुःख और शोक में संतप्त आंसू बहाते लोगों के लिए सांत्वना देने में मेरी जीभ हमेशा काम आए। किसी गरीब और रोगी की सेवा में मेरा पसीना बहे, कोई अतिथि कभी भी मेरे दरवाजे से भूखा-प्यासा न जाए। हे प्रभु! अपने इस बालक को हमेशा इस लायक बना कर रखना। प्रभु! मेरा प्रणाम स्वीकारें।

जन्म-दाता मां-बाप तो कुत्ते के पिल्लों और गधे के बच्चों को भी मिल जाते हैं, लेकिन संस्कार-दाता मां-बाप तो किसी खुशनसीब औलाद को ही मिलते हैं। वे पुत्र बड़े खुशनसीब हैं, जिन्हें बचपन में मां-बाप ने उनकी अंगुली पकड़कर सिर्फ चलना ही नहीं सिखाया, बल्कि मंदिर जाना भी सिखाया। अपने बच्चों को सिर्फ कंधों और गोद में मत बिठाइये, बल्कि उन्हें संस्कार की पाठशाला में भी दाखिल कराइए। अपने पिल्ले के सुख की चिन्ता तो कुतिया भी कर लेती है। माँ तो वह है; जो अपनी संतान के सुख के साथ अच्छे संस्कारों की भी चिन्ता करती है।

दुनिया में बुराइयां हैं, मगर क्यों? क्योंकि अच्छे लोग अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रहे हैं। अच्छे लोग एकांतवासी होते जा रहे हैं। अपनी प्रतिष्ठा और नाम को बचाये रखने के लिए लोग बुरे लोगों के लिए कुर्सी खाली कर रहे हैं। याद रखना : कुर्सी कभी खाली नहीं रहती। अच्छे लोग उस पर नहीं बैठेंगे तो स्वाभाविक है बुरे लोग उस पर कब्जा कर लेंगे और फिर संचालन की डोर उनके हाथों में होगी। इस देश में आज यही हो रहा है। परिणाम सबके सामने है।

मेरा ख्याल है कि अब शादी के समय लड़का और लड़की की कुंडली मिलाने की जगह् लड़की और उसकी होने वाली सास की कुंडली मिलानी चाहिए। कारण कि इन दोनों का ही दिन-भर आमना-सामना होता है। लड़के-लड़की की कुंडली क्या मिलाना, वे तो यों ही मिल जायेंगे। सुखी गृहस्थी के लिए वर-वधू को शादी के समय सिर्फ यही एक संकल्प लेना चाहिए कि मैं आग बनूं तो तू पानी बन जाना और तू अंगार बनेगी तो मैं जलधार बन जाऊंगा।

भूख लगे तो खाना प्रकृति है। भूख न लगे तब भी खाना विकृति है और स्वयं भूखे रहकर किसी भूखे को खिला देना संस्कृति है। भोजन यह सोचकर मत करो कि मैं खा रहा हूं बल्कि यह सोचकर करो कि मेरे भीतर जो मेरा प्रभु विराजमान है उसे मैं अर्घ्य चढ़ा रहा हूं। तुम जब यह सोचकर भोजन करोगे तो फिर कभी मांस, मदिरा और जर्दा आदि नहीं खा सकोगे। क्या तुम कभी परमात्मा को इनका भोग लगाते हो? नहीं! तो फिर इन्हें अपने पेट में डालकर अपने भीतर बैठे प्रभु को अपमानित क्यों करते हो?

अगर आप सास हैं और अपने परिवार में सुख-शांति चाहती हैं तो मेरी चार बातें ध्यान में रखिए। पहली बात, बहू और बेटी में फर्क मत डालिए। बहू को ही बेटी मानिए। दूसरी बात, कभी बहू से झगड़ा हो जाये तो बहू के पीहर वालों को भला-बुरा मत कहिए। इसे बहू बर्दाश्त नहीं करेगी। तीसरी बात, मंदिर में बैठकर बहू की बुराई मत करिए। इससे सुलह के सारे दरवाजे बंद हो जायेंगे। चौथी बात, हमेशा ध्यान रखिए कि एक बहू की चाहत क्या होती है, 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी।'

सुखी जीवन का राज है कि जो तुम्हारे पास है उसका आनंद लो, जो नहीं है उसके पीछे पागल मत बनो। बतौर उदाहरण- तुम्हारी जेब में 90 रुपये हैं तो उसका आनंद लो। 100 रुपये में जो 10 कम हैं, इसका दुःख मत करो। 100 करने के चक्कर में मत पड़ो क्योंकि 100 तो पूरे कभी होंगे नहीं, मगर यह हो सकता है कि जो 90 हैं वे भी चले जायें। सम्राट सिकंदर के भी पूरे 100 नहीं हुए तो फिर तुम किस खेत की मूली हो? तुम तो मूली भी बहुत 'मामूली' हो।

मकानों में जिस प्रकार कई कमरों के साथ एक शौचालय भी होता है और शौचालय में जितना समय एक व्यक्ति देता है, उतना ही समय एक व्यक्ति को राजनीति में देना चाहिए। दरअसल जीवन में राजनीति का महत्त्व ‘शौचालय’ से ज़्यादा कतई नहीं होना चाहिए। कारण कि फ्रिज में ज़्यादा देर तक रखा हुआ पानी बर्फ बन जाता है और रात-दिन राजनीति में रचा-बसा आदमी भी बेईमान हो जाता है।

अगर आप विद्यार्थी हैं तो मेरी एक नसीहत ध्यान में रखिए। दसवीं और बारहवीं कक्षा के इन सालों में सोइए मत। रात-दिन पढ़िए, क्योंकि यही दो साल हैं जहां से कैरियर बनता है। यदि ये दो साल सोने में निकाल दिए तो फिर ज़िंदगी-भर जागना-ही-जागना है। कारण कि गधा मजदूरी करके जीवन गुजारना होगा और यदि इन सालों में जागकर कठोर परिश्रम करके अध्ययन में सफलता अर्जित कर ली तो फिर जीवन-भर आराम से सोना-ही-सोना है। कारण कि किसी अच्छे पद पर तुम्हारी नियुक्ति होगी और ज़िंदगी आराम से कट रही होगी।

मैंने देखा : कमरे की छत पर एक छिपकली उल्टी लटकी थी। पूछा : क्या बात है, छत से उल्टी क्यों लटकी हो? नीचे क्यों नहीं आती? छिपकली ने कहा : मुनिश्री! इस छत को मैंने संभाल रखा है। अगर मैं यहां से हट गई तो यह छत नीचे गिर जायेगी। वह छिपकली और कोई नहीं; 'तुम्हीं' हो। तुम भी तो इसी भ्रम में जी रहे हो कि इस घर-गृहस्थी को मैंने संभाल रखा है। अगर मैं ना रहा तो सब गड्डमड हो जायेगा। याद रखें : किसी के 'गुजर' जाने से किसी का 'गुजारा' नहीं रुकता।

क्रोध करना है, किसी से बदला लेना है तो इसमें जल्दबाजी मत करना, बल्कि किसी ज्योतिषी के पास जाना और कहना कि मुझे क्रोध करना है, एक आदमी है जिससे बदला लेना है- इसके लिए आप अच्छा-सा मुहूर्त निकालकर दीजिए। जब तुम हर शुभ कार्य के लिए मुहूर्त दिखाते हो तो अशुभ कार्य बिना मुहूर्त के क्यों कर लेते हो? वैसे क्रोध के लिए पुष्य नक्षत्र में अमृत योग का मुहूर्त सबसे बढ़िया है, मगर यह साल में दो ही बार आता है। अब क्या ख्याल है?

तुम जब छोटे थे और खुद कमाते नहीं थे। तब तुम्हारे पिता तुम्हें खर्चे के लिए ‘पॉकेट-मनी’ दिया करते थे। अब जबकि तुम बड़े हो गये, खुद कमाने लगे और तुम्हारे पिता बूढ़े हो गये तो अब तुम्हें अपने पिता को ‘पॉकेट-मनी’ देना चाहिए। तुम जो कुछ भी कमाओ, उसका एक हिस्सा अपने पिता के हाथ में रख दो और कहो : पूज्य पिताश्री! यह सब कुछ तो आपका ही है, यह भावना-पुष्प स्वीकार करें और हमें आशीर्वाद दें।

अगर तुम्हारा बेटा अपने ड्राइंग रूम में तुम्हारी सुन्दर-सी तस्वीर टांग कर रखता है तो इसमें खुश मत होना, बल्कि यह सोचना कि फोटो तो दीवार पर लटक ही गयी है, अब पता नहीं कब इस पर माला चढ़ जाये। अतः तस्वीर पर माला चढ़े इससे पहले प्रभु की शरण में आ जाना और प्रभु के नाम की माला फेरने बैठ जाना। माला ही माल है, बाकी का माल काम आने वाला नहीं है। प्रभु अच्छे लगे व सच्चे लगे, इतना ही काफी नहीं है, बल्कि प्रभु अपने लगें, यह भी ज़रूरी है।

गालियों में भी गीत होते हैं, बस उन्हें खोजने की कला आनी चाहिए। अगर यह कला आ गई तो फिर कोई गाली तुम्हें क्रोधित नहीं कर सकती। बतौर उदाहरण : पति-पत्नी में झगड़ा हो गया। पत्नी ने गुस्से में पति को जानवर कह दिया। बाद में पत्नी ने पूछा : मैंने तुम्हें 'जानवर' कहा, बुरा नहीं लगा? पति बोला : नहीं। पत्नी ने पूछा : क्यों? पति ने कहा : तू मेरी 'जान' है ना? पत्नी बोली : हूं। और मैं तेरा 'वर' हूं ना? पत्नी बोली : हूं। तो इस तरह हम और तुम 'जानवर' ही तो हुए ना।

समाज गर्त में जा रहा है। इसका एक बड़ा कारण मीडिया है। आज मीडिया मनोरंजन के नाम पर हिंसा और अश्लीलता परोस रहा है। मीडिया 'सच्चे' समाचार की होड़ में 'अच्छे' समाचार भूल गया है। हर सच्चा समाचार अच्छा हो- यह ज़रूरी नहीं है। जिन समाचारों से समाज का स्वास्थ्य खराब हो, उन्हें न छापने-दिखाने में ही बेहतरी है। समाज के सुधार में मीडिया की अहम भूमिका हो सकती है। मगर दुर्भाग्य है कि लोकतंत्र का यह चौथा स्तंभ भी आज व्यावसायिकता का शिकार होता जा रहा है।

गाय आज धर्मनीति और राजनीति के बीच पिस रही है। जब तक गाय धर्मनीति और राजनीति के जाल से मुक्त नहीं होगी, तब तक गौ-हत्या को रोका नहीं जा सकता। मेरा मानना है कि अगर हम गाय को धर्मनीति और राजनीति के जंजाल से बाहर निकाल दें और उसे पूरी तरह से अर्थनीति से जोड़ दें तो स्वतः ही देश में गौ-रक्षा आंदोलन सफल हो जायेगा।

अगर आप मां-बाप हैं और अपने बेटे के विवाह के बारे में सोच रहे हैं तो मेरा एक सुझाव है कि आप अपने घर बहू लाना, बहुरानी मत लाना। बहू घर आयेगी तो वह ‘संस्कार’ लेकर आयेगी और बहुरानी घर आयेगी तो वह ‘कार’ लेकर आयेगी, जो कार लेकर आयेगी, तय है वह अपनी सरकार चलायेगी और जो संस्कार लेकर आयेगी, वह तुम्हारे बुलाने पर सर के बल चली आयेगी। बहू आयेगी तो वह तुम्हारे बेटे को हर रोज एक ऐसा पाठ पढ़ायेगी, जो तुम्हारे जीवन को स्वर्ग बना देगा और बहुरानी आयेगी तो वह बेटे को ऐसी पट्टी पढ़ायेगी, जो तुम्हें जीते-जी ‘स्वर्गीय’ बना देगी।

संत और पुलिस दोनों ही समाज-सुधार का काम करते हैं, फर्क केवल इतना है कि संत 'संकेत' की भाषा में समझाते हैं और पुलिस 'बेंत' की भाषा में। दरअसल जो संत के संकेत को नहीं समझते हैं, उन्हें ही पुलिस के बेंत की ज़रूरत पड़ती है। पुलिस की वर्दी किसी संन्यासी के भगवा वस्त्रों से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। वर्दी विश्वास का प्रतीक है। वर्दीधारी अगर भ्रष्टाचार को प्रश्रय देता है तो वह वर्दी की अस्मिता को खंडित करता है।

मंदिर और मस्जिद की हैसियत बाथरूम से ज़्यादा कुछ नहीं है। दरअसल मंदिर और मस्जिद एक आध्यात्मिक बाथरूम है। जिस तरह घर के बाथरूम में हम तन की गंदगी को धोते हैं, वैसे ही मंदिर और मस्जिद में मन की मलिनताओं को धोना चाहिए। बाथरूम से तुम नहा-धोकर बाहर निकलते हो तो एकदम तरोताज़े होकर निकलते हो। ऐसी ही ताज़गी, विनम्रता और शांति, मंदिर-मस्जिद से बाहर निकलने के बाद तुम्हारे चेहरे पर झलकनी चाहिए।

दान और स्नान एकान्त में होना चाहिए। जैसे तुम स्नान सड़क या चौराहे पर नहीं वरन् बंद बाथरूम में करते हो, वैसे ही दान-पुण्य गुप्त होना चाहिए। पुण्य की किसी को खबर नहीं लगने देना चाहिए, क्योंकि पुण्य छिपाने से बढ़ता है और बताने से मरता है। पुण्य बड़ा शर्मीला है। पुण्य और दान दिखाकर नहीं, छिपाकर करना चाहिए। तुम्हारे घर के अंदर कूड़ा-कचरा जमा हो और उसे फेंकना हो तो क्या तुम इसका अखबार में विज्ञापन देते हो?

एक व्यक्ति ने पूछा : मुनिश्री! आपका एड्रेस? मैंने कहा : भाई! जिसकी ‘ड्रेस’ ही नहीं उसका ‘एड्रेस’ कहां से होगा। दिगम्बर जैन मुनि ‘ विदाउट-ड्रेस’ और ‘विदाउट-एड्रेस’ होता है। संत-मुनि का अपना कोई घर नहीं होता है। वह तो भक्तों के दिलों में वास करता है। यह कितना बड़ा आश्चर्य है कि जिनका अपना कोई ‘पता’ नहीं है, वही लोगों को उनकी ज़िंदगी की असली मंजिल का ‘पता’ बताते हैं।

मैं महावीर को मंदिरों से मुक्त करना चाहता हूं; यही कारण है कि मैंने आजकल तुम्हारे मंदिरों में प्रवचन करना बंद कर दिया है। मैं तो शहर के व्यस्ततम चौराहों पर प्रवचन करता हूं, क्योंकि मैं महावीर को चौराहे पर खड़ा देखना चाहता हूं। मेरी एक ही आकांक्षा है कि महावीर जैनों से मुक्त हों ताकि उनका संदेश, उनकी चर्या, उनका आदर्श-जीवन दुनिया के सामने आ सके।

नगर में संत का आना भाग्य है। संत का अपने घर आना अहोभाग्य है। संत को याद करना सौभाग्य है। संत हमें याद करे-यह परम भाग्य है। खुद संत हो जाना-यह महाभाग्य है। इतना सब होते हुए भी हम न सुधरें तो यह दुर्भाग्य है।

अमीर हो या गरीब- दोनों के सामने समस्या एक ही है। गरीब के सामने समस्या है भूख लगे तो क्या खाये? अमीर के सामने समस्या है- क्या खाये जो भूख लगे? युवा हो या बूढ़ा - समस्या दोनों के सामने है। युवा की समस्या है-क्या करे, समय नहीं मिलता। बूढ़े की समस्या है क्या करें, समय नहीं कटता। आम आदमी हो या खास आदमी-समस्याएं दोनों के जीवन में हैं। आम आदमी की समस्या है-आज क्या पहनें? खास आदमी की समस्या है-आज क्या-क्या पहनें? संसार में कोई भी संतुष्ट नहीं है। गरीब अमीर होना चाहते हैं, अमीर सुन्दर होना चाहते हैं। कुंवारे शादी करना चाहते हैं और शादीशुदा मरना चाहते हैं।

हंसना पुण्य है। हंसाना परम-पुण्य है। जब आप हंसते हैं तो ईश्वर के लिए प्रार्थना करते हैं, मगर जब आप किसी रोते को हंसाते हैं तो ईश्वर आपके लिए प्रार्थना करता है। रोने में तो फिर भी आंसू लगते हैं, हंसने में तो वे भी नहीं लगते। फिर क्यों नहीं हंसते? हम हंसे, लेकिन हमारी हंसी मामा शकुनि की तरह कपटपूर्ण न हो, बल्कि शिशु और संत की तरह निश्छल/निष्पाप हो। वैसे सही मायने में दो ही लोग हंसते हैं- एक तो पागल और दूसरा परम-हंस। बाकी लोग या तो रोते हैं या फिर हंसने का ढोंग करते हैं। कहो! कैसी रही?

प्रश्न पूछा है सुखी जीवन का राज क्या है? सुखी जीवन का राज है कि हर दिन इस तरह बिताओ कि रात चैन की नींद सो सको, हर रात इस तरह गुजारो कि सुबह किसी को मुंह दिखाने में न शरमाओ। जवानी को इस तरह से जियो कि बुढ़ापे में पछताना न पड़े और बुढ़ापे को इस तरह बनाओ कि किसी के सामने हाथ फैलाना न पड़े।

यदि आप गाड़ी चलाते हैं तो उसे सर्विस के लिए गैराज में भेजते हैं। क्यों? ताकि उसकी सफाई हो सके। संत-मुनियों की धर्म सभाएं भी गैराज जैसी हैं। जहां तुम्हारे दिल-दिमाग रूपी इंजन की धुलाई की जाती है। ज़िंदगी भी एक गाड़ी है- संकल्प की गाड़ी। अगर इस गाड़ी में हौसले के पहिए, धर्म का इंजन, कर्म का ईंधन, संयम का स्टीयरिंग व्हील, मर्यादा का एक्सीलेटर, अनुशासन का ब्रेक और टूल-बॉक्स में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित्र के औजार हों तो यह गाड़ी निश्चित ही मोक्ष मंजिल तक पहुंचती है।

मैंने सुना है : एक शाम पति-पत्नी में झगड़ा हो गया। रात पति ने पत्नी को एक चिट दी। जिस पर लिखा था : मुझे कल बॉम्बे जाना है। 6 बजे की ट्रेन है, अतः 5 बजे उठा देना। पति चिट देकर आराम से सो गया। सुबह उठा और घड़ी को देखा तो 8 बज रहे थे। पति बड़ा क्रोधित हुआ। तभी पति की नजर पास पड़ी चिट पर गई। उसमें लिखा था : ''श्रीमान जी! 5 बज गये हैं, उठ जाइए।'' पति-पत्नी का यह तो हाल है फिर भी कहते हैं : ''कहो ना...प्यार है।'' इंडो-पाक जैसे हालात हैं, फिर भी कहते हैं- ''हम साथ-साथ हैं।'' यह आदर्श दाम्पत्य तो नहीं है।

धर्म और धन दोनों औषध हैं, लेकिन धर्म टॉनिक है। धर्म केवल पीने की दवा है। धन मरहम है, वह बाहर में लगाने की दवा है। दोनों का सही प्रयोग जीवन को स्वस्थ बनाता है, परन्तु दुर्भाग्य से आज सब कुछ उल्टा हो रहा है। धर्म को बाहर लगाया जा रहा है, उसका प्रदर्शन किया जा रहा है और धन पिया जा रहा है, उसे जिया जा रहा है। यह विसंगति ही जीवन के तनाव का कारण है।

मैंने सुना है : अमेरिका, रूस और भारत के राष्ट्रपति भगवान से मिले। भगवान से बुश ने पूछा : प्रभु! मेरे देश से भ्रष्टाचार कब खत्म होगा? भगवान बोले : पूरे 60 साल बाद। यह सुनकर बुश की आंखों में आंसू आ गये, क्योंकि ये अच्छे दिन देखने के लिए वे तब तक जीवित नहीं रहेंगे। फिर पुतिन ने यही प्रश्न भगवान से पूछा। भगवान ने कहा : 50 साल बाद। जवाब सुनकर पुतिन की भी आंखों में आंसू आ गये, समस्या वही थी। आखिर में डॉ. अब्दुल कलाम ने भगवान से पूछा : प्रभु! और मेरे देश से भ्रष्टाचार कब खत्म होगा? यह सुनकर इस बार खुद भगवान की आंखों में आंसू आ गये। इसका मतलब?

जैन धर्म खुद तो 'जबरदस्त' है, मगर वह किसी के साथ 'जबरदस्ती' कभी नहीं करता। इस धर्म को समझने के लिए दिमाग नहीं, दिल चाहिए। व्यवहार में अहिंसा, विचारों में अनेकांत और जीवन में अपरिग्रह-यही जैन धर्म है। जैन धर्म का सार यदि एक शब्द में कहना हो तो वह शब्द है - वीतरागता। जैन धर्म में व्यक्ति की नहीं, व्यक्तित्व पूजा की प्रेरणा है। यह धर्म अपने अनुयायी को सिर्फ भक्त बनाकर नहीं रखता, बल्कि उसे खुद भगवान बनने की भी छूट देता है। जैन धर्म हीरा है, मगर दुर्भाग्य है कि आज यह कोयला बेचने वालों के हाथों में आ गया है।

जो तुम्हारा बुरा करता है और बुरा सोचता है उसके प्रति भी तुम कल्याण-भाव रखो और उसे माफ कर दो। कारण कि वह किसी जन्म का तुम्हारा ही भाई है। अपने ही दांत से यदि जीभ कट जाती है तो क्या तुम अपने दांत को तोड़ डालते हो? नहीं ना, तो फिर अपने ही किसी भाई की भूल पर इतना आग-बबूला क्यों होते हो। और फिर तुम्हें पता नहीं कि हर महापुरुष के पीछे एक खलनायक ज़रूर होता है। आलोचकों से डरो नहीं। आखिर पत्थर उसी पेड़ पर फेंके जाते हैं, जिस पर मीठे-मीठे फल लटक रहे होते हैं।

सुखी जीवन के चार सूत्र हैं। पहला : वस्तु का 'आग्रह' मत करो। जो मिले उसे प्रसाद समझकर स्वीकार कर लो। दूसरा : जुबान से 'विग्रह' मत करो, क्योंकि मुख से एक गलत शब्द निकल जाये तो रामायण होते-होते महाभारत हो जाता है। तीसरा : संपत्ति के लिए 'परिग्रह' मत करो, क्योंकि अति परिग्रह और अति परिचय अंततः दुःख का कारण बनता है। चौथा : किसी भी व्यक्ति के प्रति 'पूर्वाग्रह' से ग्रसित होकर व्यवहार मत करो, क्योंकि रात-भर में दोस्त दुश्मन और दुश्मन दोस्त बन सकता है।

चींटी बहुत छोटा जीव है। घर-आंगन की छोटी-छोटी यात्रा में ही उसका पूरा दिन चला जाता है। चींटी को अगर पूना से चलकर दिल्ली जाना हो तो कितने दिन लगेंगे, हम कल्पना कर सकते हैं, लेकिन वही नन्हीं सी चींटी यदि किसी व्यक्ति का पल्ला पकड़ ले या किसी व्यक्ति के वस्त्रों पर चढ़ जाये और वह व्यक्ति दिल्ली जाने वाली ट्रेन में बैठे तो बिना प्रयास के चींटी अगले दिन दिल्ली पहुंच जाती है। इसी प्रकार सद्‌गुरु का पल्ला पकड़कर हम भी भव-सागर की दुर्गम यात्रा बिन प्रयास के पूरी कर सकते हैं।

मैं हर रोज एक प्रार्थना करता हूं और चाहता हूं कि तुम भी यह प्रार्थना ज़रूर करो। मैं प्रार्थना करता हूं कि हे प्रभु! दुनिया में हर रोज एक ऐसा आदमी ज़रूर पैदा हो जिसमें महावीर-बुद्ध जैसा संकल्प हो, राम-कृष्ण जैसा गौरव हो, कुन्दकुन्द-कबीर जैसी साधना हो, गांधी-विवेकानंद जैसी सरलता हो और हां! दुनिया में हर रोज एक ऐसा आदमी ज़रूर मरे, जिसे महावीर जैसी मृत्यु उपलब्ध हो, जिसकी मृत्यु लोगों के लिए दीवाली का उत्सव बन जाए, 'महावीर-निर्वाण-महोत्सव' बन जाए। जीना सीखना है तो गीता से सीखो और मरना सीखना है तो महावीर से सीखो।

रेल में यात्रा करना उस यात्री के लिए ज़्यादा कठिन होता है, जिसके पास सामान ज़्यादा होता है, उसे चढ़ने में भी दिक्कतें आती हैं और उतरने में भी। यह सच्चाई जीवन की यात्रा पर भी लागू होती है। जीवन के सफ़र में यदि हम ज़्यादा संपत्ति लेकर चलेंगे तो मौत का स्टेशन आने पर हमें उतरने में भी काफ़ी दिक्कतें होंगी। जीवन यात्रा सुखमय करनी हो तो अति-परिग्रह और अति-परिचय से बचें।

दुनिया में तीन देव हैं- ब्रह्मा, विष्णु, महेश। ब्रह्मा जन्मदाता है, इसलिए लोग उन्हें पूजते हैं। विष्णु पालक और महेश संहारक हैं- इसलिए लोग उन्हें सिर झुकाते हैं। ब्रह्मा में विष्णु और विष्णु में महेश नहीं समा सकते, लेकिन दुनिया में माँ एक ऐसा तत्व है जिसमें ब्रह्मा भी है, विष्णु भी है और महेश भी है। माँ जन्म देती है इसलिए ब्रह्मा है, संतान को पालती है इसलिए विष्णु है और संस्कार देकर उसका उद्धार करती है इसलिए महेश भी है। नौ घंटे पांच किलो का पत्थर पेट पर बांध कर देखो, पता लग जायेगा माँ क्या होती है?

संत ने द्वार पर दस्तक दी और आवाज लगाई : भिक्षां देहि। एक नन्हीं बालिका बाहर आई। बोली : बाबा! हम गरीब हैं, हमारे पास देने को कुछ नहीं है। संत बोले : बेटी ! मना मत कर, अपने आंगन की धूल ही दे दे। लड़की ने एक मुट्ठी धूल उठाई और भिक्षा पात्र में डाल दी। शिष्य ने पूछा : 'गुरुजी! धूल भी कोई भिक्षा है' आपने धूल देने को क्यों कहा? संत बोले : बेटे! अगर वह आज ना कह देती तो फिर कभी नहीं दे पाती। आज धूल दी तो क्या हुआ? देने का संस्कार तो पड़ गया। आज धूल दी है; कल फल-फूल भी देगी। दाता बनकर जाओ।

रात सोने से पहले आज की ‘समीक्षा’ करें। आज जो ठीक बन पड़ा, उसकी प्रशंसा करें, उसे उपलब्धि मानें और जो गलत हुआ उसके लिए पश्चाताप करें। आज हुई गलतियों की भरपाई करने के लिए कल के कार्यक्रम में कुछ ऐसे तथ्य जोड़ें, जो खोदे गए गड्ढे को पाटकर समतल कर सकें। मौत को ‘टाला’ तो नहीं जा सकता, मगर ‘सुधारा’ तो जा ही सकता है।

महावीर वाणी है- ‘तू अपनी चिन्ता कर। दुनिया की चिन्ता करने के लिए तो दुनिया भरी पड़ी है, पर तुझे छोड़कर कोई दूसरा तेरी चिन्ता करने वाला नहीं है।’ और आदमी है कि दूसरों की चिन्ता में मरा जा रहा है। मेरे बच्चों का क्या होगा? बच्चों के बच्चों का क्या होगा? क्यों भाई तेरे बच्चों के बच्चे क्या विकलांग पैदा होंगे? तू इस बात की चिन्ता मत कर कि मेरे बाद व्यापार को कौन संभालेगा? व्यापार तो बीबी-बच्चे कोई भी संभाल लेगा। तू इस बात की चिन्ता कर कि दुर्गति में तुझे कौन संभालेगा।

खाली मत बैठिए। अपने मन और तन को किसी नेक कार्य में लगाकर रखिए। निठल्ला बैठा आदमी जल्दी बूढ़ा होता है। जब आदमी थककर बैठ जाता है तो बीमारी उस पर बैठ जाती है और फिर वह आदमी किसी काम का नहीं रहता। थककर बैठ जाने से तो इंसान की किस्मत भी बैठ जाती है। सेवानिवृत्त होने के बाद भी सेवा-कार्य में लगे रहिए। बीते कल को याद कर पछताते न रहिए और न ही भविष्य की आशंका की छाया-भूत से डरिये, बल्कि सुबह जब सो कर उठो तो हिम्मत से उठिए और सोचिए 'आज' ही 'सत्य' है।

मक्खन में फंसे हुए बाल को निकालना सहज है, परन्तु सूखे हुए गोबर के कंडे में फंसे बाल को निकालना बड़ा कठिन है। ज्ञानी के शरीर में रहने वाला जीव मक्खन के गोले में फंसे बाल जैसा है। वह मृत्यु के समय सहजता से प्राण छोड़ देता है लेकिन अज्ञानी मृत्यु के समय रोता है क्योंकि उसके प्राण वासना में अटक जाते हैं और यही वासना उसे फिर परिवार में खींच लाती है। माताएं-बहनें कहती हैं न, जरा मुन्ना को देखना बिलकुल दादा जी पर गया है। दादा जी पर नहीं, दादा जी ही हैं, जो पोता बनकर फिर आ गये।

जैनियों के पास महावीर स्वामी का बढ़िया माल है, लेकिन पैकिंग घटिया है, जबकि जमाना पैकिंग का है। जैन समाज या तो अपने मंदिरों के दरवाजे जन-जन के लिए खोले या फिर महावीर को मंदिरों की दीवारों से निकालकर आम आदमी तक लाए, चौराहे तक लाए। चौराहे पर लाने से मेरा यह कहना कतई नहीं है कि मैं मर्यादाओं से खेल रहा हूं। हमें दो में से किसी एक को चुनना होगा या तो महावीर तक हर आदमी को पहुंचने का हक देना होगा या फिर महावीर को हर आदमी तक पहुंचाना होगा। आपका क्या ख्याल है?

आज के आदमी के पास सुख और सुविधा के लिए यों तो बहुत कुछ है। उसके पास टी.वी. सेट है, डिनर सेट है, डायमंड सेट है, सोफा सेट है, टी सेट है। सिर्फ एक 'माइण्ड-अपसेट' है, बाकी सब सेट है। आदमी का दिमाग विचारों का विश्वविद्यालय बना हुआ है और दिमाग में एक अंतहीन महाभारत मचा हुआ है। हर ओर टेंशन है। टेंशन का इलाज मेडिसिन नहीं, मेडिटेशन है।

जीवन में दो-चार आलोचक भी ज़रूरी हैं। यदि फिल्म में खलनायक न हो तो नायक के व्यक्तित्व में चमक नहीं आती। और जीवन में दो-चार निंदक न हों तो आदमी लापरवाह हो जाता है। निंदक हमें सावधान रखता है, जिस गली में दो-चार सुअर होते हैं, वह गली स्वच्छ रहती है। निंदक सुअर के समान है, वह हमें शुद्ध रखता है। कोई तुम्हारी निन्दा करे तो सोचना लोग उसी पेड़ पर पत्थर फेंकते हैं जिस पर मीठे-मीठे फल लटक रहे होते हैं। दुनिया में आलोचना भी उसी की होती है, जिसमें कोई दम-खम होता है।

भोजन करने बैठो और भोजन में कुछ ऊंचा-नीचा हो जाए तो भी भोजन को चुपचाप 'प्रसाद' समझकर खा लेना। अपने भाव नहीं बिगड़ने देना। और हां, भाव बिगड़ भी गये तो भाषा नहीं बिगड़ने देना क्योंकि भाव बिगड़ने से तो सिर्फ तुम्हारा नुकसान होगा, लेकिन भाषा बिगड़ेगी तो पूरे परिवार का नुकसान होगा। क्रोध की भाषा ही महाभारत की परिभाषा है। पहले अतिथि को खिलाओ फिर खुद खाओ। तुम्हारा खाया तो गोबर बन जाएगा लेकिन अतिथि को खिलाकर खाना प्रभु का प्रसाद हो जाता है।

आज उधार की ज़िंदगी ने सभी कुछ बेमानी बना दिया है। कल तक ज़िंदगी 'मौन' से चलती थी, आज 'लोन' से चल रही है। माल घर ले आओ और किस्तें चुकाते रहो। टी.वी., फ्रिज, वाशिंग मशीन, एसी, कार, कम्प्यूटर, सैल-फोन जैसे संसाधनों से देखते ही देखते घर भर गया। पूछो : अब सुख भोग रहे हो? बोले : नहीं। तो? किस्तें चुका रहा हूं। और किस्तें चुकाते-चुकाते एक दिन आदमी खुद चुक जाता है। मेरा कहा मानो तो सूखी रोटी खा लेना, दो कपड़ों में ज़िंदगी गुजार लेना, मगर कर्ज लेकर शानो-शौकत मत दिखाना, वरना मूल से ब्याज बढ़ जाएगा। ध्यान रहे : क्रोध, घाव, आग और कर्ज को कभी कम मत समझना।

पत्नी ने पूछा- अगर मैं मर गई तो तुम क्या करोगे? पति ने कहा- ऐसा कैसे हो सकता है, मैं तुम्हें मरने ही नहीं दूंगा। पत्नी ने कह- वह तो ठीक है, मगर कल्पना करो, मैं मर गयी तो तुम क्या करोगे? पति ने कहा- क्या करूंगा? मैं तो बस पागल ही हो जाऊंगा। पत्नी बोली- सच? पति बोला-बिलकुल सच। पत्नी ने खुश होकर पूछा- तो इसका मतलब तुम दूसरी शादी नहीं करोगे? पति मुस्कुराया और बोल- अब पागल आदमी का क्या भरोसा? वह तो कुछ भी कर सकता है। इसी का नाम संसार है।

जैन धर्म दुनिया का सबसे परिपक्व और सर्वश्रेष्ठ धर्म है, लेकिन इसके अनुयायी जैन अपने धर्म के आचरण में अभी कच्चे हैं। जैन धर्म में 'पाठ' अपरिग्रह का है, लेकिन 'ठाठ' परिग्रह का है। श्रावण-संस्कृति आज वाणिज्य-संस्कृति बन गई है। महावीर नग्न खड़े हैं और आश्चर्य है कि दुनिया में सबसे ज़्यादा कपड़े की दुकान महावीर के अनुयायी जैनियों की हैं। महावीर के तन पर वस्त्र की एक चिंदी तक नहीं थी और हम हैं कि 'महावीर वस्त्र भण्डार' चला रहे हैं। हम दोहरा जीवन जी रहे हैं। एकान्त मयखाने में शराब और समाज में पानी छानकर पी रहे हैं।

सत्य और ईमान का रास्ता स्वर्ग में जाकर खत्म होता है। दुर्भाग्य है कि आज सत्यवादियों और ईमानदारों का अकाल-सा पड़ गया है, क्यों? क्योंकि अब लोगों का विश्वास है कि अब ईमानदारी के दिन लद गये हैं। वे तर्क देते हैं कि देखो! टेढ़े-मेढ़े वृक्षों को यहां कोई नहीं छेड़ता और सीधे-सपाट वृक्ष हमेशा ही काटे जाते हैं। मेरा कहना है-सच्चाई के दिन कभी नहीं लदते। कीमती फर्नीचर हमेशा सीधी-सपाट लकड़ी का ही बनता है। टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ियां हमेशा चूल्हे में जलाने के काम आती हैं।

बुजुर्गों! अपना क्रोध एकदम बंद कर दो, क्योंकि बूढ़े आदमी का क्रोध कोई भी पसंद नहीं करता। जवान अपना क्रोध 'थोड़ा मंद ' कर ले तो चल जायेगा, लेकिन बुजुर्ग को अपना क्रोध 'थोड़ा मंद' नहीं, 'पूरा बंद' करना होगा। जवानी में तो फिर भी क्रोध की कीमत होती है। जो कमाता है, घर का खर्च चलाता है, लोग उसका क्रोध भी बर्दाश्त कर लेते हैं लेकिन जो न कमाता है और बैठे-बैठे खाता है, फिर भी गुर्राता है, उसका क्रोध कोई पसंद नहीं करता। बूढ़े आदमी के क्रोध की कीमत कुत्ते जैसी होती है। लोग कहते हैं : बुड्ढे की तो भौंकने की आदत ही पड़ गई है, भौंकने दो।

सीखने की ललक है तो कोई चींटी से भी सीख सकता है और ललक नहीं है तो मुनि तरुणसागर भी कुछ नहीं सिखा सकते। प्रयत्न और पुरुषार्थ सीखना है तो चींटी से सीखो। चींटी अपने से पांच गुना वज़न लेकर दस बार दीवार पर चढ़ती है, गिरती है, चढ़ती है गिरती है, मगर हिम्मत नहीं हारती। ग्यारहवीं बार फिर कोशिश करती है और सफल हो जाती है। संघर्ष करिए, कोशिश करिए, सफलता अवश्य मिलेगी। महावीर से लेकर महात्मा गांधी तक, बुद्ध से लेकर बिड़ला तक, क्राइस्ट से लेकर किरण बेदी तक, आदि शंकराचार्य से लेकर अब्दुल कलाम तक और तुकाराम से लेकर तरुणसागर तक सब संघर्ष करके ही अपनी मंजिल तक पहुंचे हैं।

नारी के तीन रूप हैं लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा। नारी परिवार को सम्पन्न बनाने के लिए लक्ष्मी का रूप धारण करे। संतान को शिक्षित करने के लिए वह सरस्वती बन कर दिखाए तथा सामाजिक बुराइयों को ध्वस्त करने के लिए सिंह पर आरूढ़ दुर्गा की भूमिका निभाए। नारी कल भी भारी थी, आज भी भारी है/पुरुष कल भी आभारी था, आज भी आभारी है।

मैंने एक युवक से पूछा : तुम क्या करते हो? उसने कहा : मैं पढ़ता हूं। तुम पढ़ाई क्यों करते हो? पास होने के लिए। पास क्यों होना चाहते हो? प्रमाण पत्र पाने के लिए। प्रमाण पत्र क्यों पाना चाहते हो? नौकरी के लिए। नौकरी क्यों चाहिए? पैसा कमाने के लिए। पैसा कमाना क्यों चाहते हो? पेट भरने के लिए। पेट क्यों भरना चाहते हो? जीने के लिए। मैंने आखिरी बार पूछा : जीना क्यों चाहते हो? जवाब मिला : पता नहीं। अधिकतर लोगों की ज़िंदगी की हकीकत यही है।

दो मित्र बातें कर रहे थे। एक बोला- कैसा कलयुग है। चारों ओर अंधेरा-ही-अंधेरा है। दो काली रातों के बीच केवल एक उजला दिन आता है। तभी दूसरे ने कहा : नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है। दो उजले दिनों के बीच केवल एक ही तो अंधेरी रात आती है। परिस्थिति एक ही है, मगर दोनों के नज़रिये में कितना फर्क है। आपका नज़रिया क्या है?

मानव के पास जो आंसू हैं, वे दुर्लभ हैं। आंसुओं के तीन प्रकार हैं। एक, वेदना के आंसू. जब कोई पाप करने के बाद आंसू निकल आएं तो ये वेदना के आंसू होते हैं। अपने किसी प्रिय के खो जाने पर उसकी याद में आंसू निकल आएं तो वे विरह के आंसू होते हैं और प्रभु को पुकारते-पुकारते भक्ति में आंसू निकल आए तो वे वंदना के आंसू होते हैं। सती चंदना के आंसू ऐसे ही वंदना के आंसू थे।

पिता रोये तो समझना उसका वारिस चला गया है। संतान रोये तो समझना उसके सिर से छाया चली गई है। बहन रोये तो समझना उसका रक्षाबंधन का त्यौहार चला गया है। पत्नी रोये तो समझना उसकी मांग का सिन्दूर चला गया है। माँ रोये तो समझना उसके बुढ़ापे का सहारा चला गया है। पूरा गांव रोये तो समझना कोई संत दुनिया से चला गया है और संत-मुनियों की भी आंखों में आंसू आ जाए तो समझना किसी तीर्थंकर को मोक्ष प्राप्त हो गया है। महावीर स्वामी की निर्वाण वेला में गौतम की भी आंखों में आंसू थे।

क्रोध बुरा नहीं है, क्रोध को जीभ का साथ मिल जाना बुरा है। अगर क्रोध को जीभ का साथ न मिले तो क्रोध न के बराबर रह जाता है और मन में पैदा हुए क्रोध को जीभ का साथ मिल जाए तो जीवन में महाभारत मच जाता है। क्रोध को जीभ का साथ देना बंद कर दो, मैं गारंटी लेता हूं- जीवन के आधे झगड़े आज और अभी खत्म हो जायेंगे। क्रोध अंगारा है, आप जलधारा बनिए। शांति के सागर बनिए। आचार्य शांतिसागर बनिए।

मंदिर तुम्हारा ही प्रतिरूप है। पद्मासन में तुम्हारी मुद्रा मंदिर की ही प्रतिकृति है, जैसे आलथी-पालथी के जैसा चबूतरा, धड़ जैसा चबूतरे पर मंदिर का गोल कमरा, सिर के जैसा गुम्बद, जूड़े जैसा कलश, कान और आंख जैसी खिड़कियां, मुख जैसा दरवाजा, आत्मा जैसी मूर्ति और मन जैसा पुजारी। तुम्हारी देह-मंदिर में विदेही-परमात्मा बैठा है। उस परमात्मा को पहचानना ही इस देह-मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा है।

महावीर से गौतम ने पूछा : भंते! दान देना ठीक है या संग्रह करना? महावीर ने अपनी एक हाथ की मुट्ठी बंद की और गौतम से पूछा : यदि यह हाथ सदा ऐसा ही रहे तो क्या होगा? गौतम ने कहा : हाथ अकड़कर निकम्मा हो जाएगा। फिर महावीर ने मुट्ठी को खोलकर पूछा : और यदि हथेली को हमेशा यों रखा जाये तो क्या होगा? तब भी हाथ अकड़कर बेकार हो जाएगा। महावीर बोले : गौतम! ज़िंदगी में मुट्ठी बांधना भी ज़रूरी है और खोलना भी। अर्जन के साथ विसर्जन ज़रूरी है। खाया हुआ तो बेकार हो जाएगा, लेकिन दिया हुआ बेकार नहीं जाएगा।

दूसरों की भलाई करना अच्छा है, लेकिन अपनी बुराई ढूंढ़ना और भी अच्छा है। सत्य बोलना अच्छा है, लेकिन दूसरों के प्राणों की रक्षा के लिए झूठ बोलना और भी अच्छा है। चरित्र निखरे तो अच्छा है, लेकिन हर जगह प्यार बिखरे तो और भी अच्छा है। कर्ज चुकाना अच्छा है, लेकिन फर्ज निभाना और भी अच्छा है। बुराई का नियंत्रण अच्छा है, लेकिन अच्छाई का आमंत्रण और भी अच्छा है। तीर्थंकरों और अवतारों 'को' मानना अच्छा है, लेकिन तीर्थंकरों और अवतारों 'की' मानना और भी अच्छा है।

संत का आना ही बसंत का आना है। बसंत आता है तो प्रकृति मुस्कराती है। संत आता है तो संस्कृति मुस्कराती है। संत सोते मनुष्य को जगा देता है। जगे हुए को पैरों पर खड़ा कर देता है और खड़े हुए की नसों में खून दौड़ा देता है। सूखे को हरा करना, बसंत का काम है। मुर्दे को खड़ा करना, संत का काम है। फागुन आता है, फूलों का त्यौहार लिए। सावन आता है, मेघों का मल्हार लिए। संत आता है खुशियों का उपहार लिए। कोई गैर नहीं- यह धर्म का मंत्र है। कोई और नहीं- यह प्रेम का मंत्र है। कोई वैर नहीं- यह संत का मंत्र है।

आप अमीर हैं, आपके घर नौकर-चाकर हैं, तब भी आप अपना काम खुद करें। हर रोज एक कमरे में ही सही, झाड़ू खुद लगायें, अपनी जूठी थाली खुद धोयें। झाड़ू लगाने, थाली धोने में शर्म कैसी? मैं पूछता हूं कि सुबह-सुबह जब हम निवृत्ति के लिए जाते हैं तो हमारी बैठक कौन धोता है? जब हम हमारी बैठक स्वयं धोते हैं तो अपने घर का झाड़ू क्यों नहीं लगा सकते? अपनी जूठी थाली क्यों नहीं धो सकते? बूढ़े मां-बाप की सेवा क्यों नहीं कर सकते?

10 साल के हो जाओ तो माँ की उंगली पकड़कर चलना छोड़ दो। 20 के हो जाओ तो खिलौनों से खेलना छोड़ दो। 30 के हो जाओ तो आंखों को इधर-उधर घुमाना छोड़ दो। 40 के हो जाओ तो रात में खाना छोड़ दो। 50 के हो जाओ तो होटल में जाना छोड़ दो। 60 के हो जाओ तो व्यापार करना छोड़ दो। 70 के हो जाओ तो बिस्तर पर सोना छोड़ दो। 80 के हो जाओ तो लस्सी पीना छोड़ दो। 90 के हो जाओ तो और जीने की आशा छोड़ दो । 100 के हो जाओ तो दुनिया को ही छोड़ दो।

मेरा कहा मानें तो आप अपने घर के सामने एक कचरा-पेटी और दरवाजे पर एक खूंटी जरूर गाड़कर रखिए। वह इसलिए कि रात को जब आप दुकान से आएं तो बाहर की किच-किच का कचरा, कचरा-पेटी में डाल दें और दिन-भर झंझटों के खूंटी पर टांग दें और फिर तनाव मुक्त होकर मुस्कराते हुए घर में प्रवेश करें। एक बात तय है कि काम पर जाओगे तो वहां कोई-न-कोई मुश्किल आनी ही है, पर उन मुश्किलों से तुम्हारी पत्नी और बच्चों का क्या लेना-देना?

सोमवार से रविवार तक सात वार होते हैं, लेकिन यह तो सप्ताह के सात वार हुए। मैं एक आठवां वार भी बताता हूं, वह है- परिवार। 7 दिन मिलते हैं तो सप्ताह, 30 दिन मिलते हैं तो माह, 12 माह मिलते हैं तो साल बनता है। यही मेल-मिलाप परिवार के साथ भी लागू होता है। आज परिवार का मतलब ‘हम दो हमारे दो’ रह गया है, इसमें मां-बाप नहीं आते। जबकि Family का अर्थ है- F-father, A-and, M-mother, I- i, L-love, Y-you.

‘सत्यं शिवं सुन्दरं’ में से आज सत्यं और शिवं गायब हो गये हैं। अब सिर्फ ‘सुन्दरं’ ही शेष बचा है। आज ओल्ड-से-ओल्ड आदमी को भी लेटेस्ट-से-लेटेस्ट फैशन चाहिए। हमारे समाज में स्त्रियों के लिए सोलह शृंगार की बात कही गई है, किन्तु जब से शृंगार फैशन बन गया है, तब से वह बाज़ारू हो गया है। शृंगार और फैशन में उतना ही अंतर है जितना कि झरने के पानी और मिनरल वाटर में। वस्त्र भी शृंगार का एक महत्त्वपूर्ण अंग हैं। वस्त्र तन ढकने के लिए होता है, लेकिन आज हम सब जानते हैं कि वस्त्र के मामले में कैसा फैशन आया है।

नसरुद्दीन दिल्ली जा रहा था। दोस्तों ने कहा- जरा संभल कर रहना। वहां हर चीज के दुगने दाम बताये जाते हैं। दिल्ली पहुंचा। छाता लेने एक दुकान पर गया। पूछा- भाई! छतरी का क्या दाम है? दुकानदार बोला : 100 रुपये। मुल्ला को दोस्तों की बात याद आई, 'हर चीज के दुगने दाम...।' बोला- 50 में दोगे? दुकानदार बोला- 80 में दूंगा। मुल्ला-40 में लूंगा। दुकानदार- अच्छा! न मेरी न तेरी 60 में। मुल्ला - मैं तो 30 दूंगा। अब तो दुकानदार चिढ़ गया और गुस्से में बोला-मुफ्त में ले लो। मुल्ला ने कहा- बड़े मियां। तब तो एक नहीं, दो लूंगा। आदमी का मन भी ऐसा ही है।

कुछ लोग हैं, जो संत-मुनियों के पास जाते हैं और कहते हैं : मुनिश्री ! मेरा हाथ देख लीजिए। मैं कहता हूं-संत-मुनियों को अपना हाथ दिखाने की कोई ज़रूरत नहीं है। बस संत-मुनियों का हाथ अपने सिर पर रखवा लीजिए, सब कुछ ठीक हो जायेगा। आप उनके 'चरण-कमल' की वंदना कीजिए, जिससे उनके 'नयन-कमल' आप पर पड़ेंगे और वे अपने 'कर-कमल' से आशीष प्रदान करेंगे, जिससे तुम्हारा 'मुख-कमल' प्रसन्नता से खिल उठेगा।

अब बेटियां बेटों से कम नहीं हैं। मां-बाप के लिए तो बेटियां वरदान हैं। आजकल बेटों से ज़्यादा मां-बाप का ख्याल बेटियां रखती हैं। बेटी ससुराल में रहकर भी मां-बाप का ख्याल रखती है, लेकिन बेटे घर में रहकर भी मां-बाप का ख्याल...। ससुराल में बेटी को कोई भला-बुरा कह दे तो चुपचाप सह लेगी, लेकिन उसके मां-बाप को कोई कुछ कह दे तो वह झांसी की रानी की तरह सामने आ जाती है और इधर बेटों के सामने ही बहू मां-बाप को गालियां देती रहे तो भी निकम्मे बेटे की चुप्पी नहीं टूटती।

कोई अच्छा कार्य करो तो उसका श्रेय अपने पास नहीं रखना। उसका श्रेय अपने मां-बाप को दे देना, अपने प्रभु, अपने गुरु को दे देना। श्रेय अपने पास रखोगे तो इससे अहंकार पैदा होगा और कभी कोई काम बिगड़ जाये तो उसकी जिम्मेदारी खुद अपने ऊपर ले लेना। इससे भूल सुधार तो हो ही जायेगा, एक बड़े पाप से भी बच जाओगे लेकिन तुम इतने बेईमान हो कि कुछ भी अच्छा हुआ तो कहते हो मेरी वजह से हुआ है और कभी कुछ बुरा हो तो उसके लिए किसी और को जिम्मेदार ठहराते हो। यह कैसी नाइंसाफी है?

लक्ष्मी के तीन प्रकार हैं। अलक्ष्मी, लक्ष्मी और महालक्ष्मी। जो अनीति से प्राप्त हो, वह अलक्ष्मी है। जो नीति से प्राप्त हो, वह लक्ष्मी है और जो नीति, प्रीति और रीति से प्राप्त हो, वह महालक्ष्मी है। अलक्ष्मी विनाश को लाती है, लक्ष्मी विलास को लाती है और महालक्ष्मी विकास को लाती है। आप अनीति के धन से पत्नी को सोने के कंगन तो पहना सकते हो, लेकिन यह भी मुमकिन है कि इसके लिए आपको लोहे की हथकड़ियां पहननी पड़ जाये। कहिए-क्या ख्याल है?

अगर आप मुझ तरुणसागर का कहा माने तो मैं आपसे एक निवेदन करूंगा कि अपने मित्र, चित्र और चरित्र को हमेशा रखें पवित्र, क्योंकि यही है ज़िंदगी का असली इत्र। आपको पता है कि चरित्र के पतन में प्रायः गलत मित्रों और गलत चित्रों का हाथ होता है। गलत मित्र और गलत चित्र चरित्र को नष्ट करने वाला अमोल- शस्त्र है अथवा यों कहो कि कभी खाली न जाने वाला ब्रह्मास्त्र है।

व्यापार में नुकसान हो जाये तो जी मत जलाना। सोचना : अन्याय का धन घर में आया होगा, अच्छा हुआ चला गया। बिल्ली दूध पी जाये, कुत्ता रोटी खा जाये तो सोचना : जिसके भाग्य का था, ले गया। कोई कुछ कड़वा कह दे तो बुरा मत मानना। सोचना : बड़े हैं, अपना समझ कर ही तो कह रहे हैं। कोई बुराई कर दे तो दिल को छोटा न करना। सोचना : शब्द कहां चिपकते हैं? सामने वाला गुस्से में हो तो आप चुप रहिए। वह थोड़ी देर फूं- फां करके खुद ही ढीला पड़ जायेगा।

जो केवल ‘अपना’ भला चाहे वह दुर्योधन है, जो ‘अपनों’ का भला चाहे वह युधिष्ठिर है और जो ‘सबका’ भला चाहे वह श्रीकृष्ण है। केवल अपना भला चाहने वाला पापात्मा है, अपनों का भला चाहने वाला पुण्यात्मा है और सबका भला चाहने वाला परमात्मा है। दुर्योधन पापात्मा है, युधिष्ठिर पुण्यात्मा है और श्रीकृष्ण परमात्मा है। सोचिए! आप क्या हैं?

संत और सैनिक को सोने मत देना। अगर ये सो गये तो समाज और देश का भाग्य सो जायेगा। पापी इंसान और भ्रष्ट नेता को जागने मत देना, क्योंकि ये जाग गए तो समाज व देश का अमन-चैन खो जायेगा। जिस देश का संत व सिपाही जागरूक और ईमानदार होगा, वह देश कभी भी नष्ट-भ्रष्ट नहीं हो सकता। जागरूक संत और ईमानदार सिपाही ही देश को अमन-चैन दे सकता है।

मैं तरुणसागर तुमसे यह नहीं कहता कि घर-बाजार छोड़कर भाग जाओ। मैं तो यह कहता हूं कि 24 घंटे में से 23 घंटे 55 मिनट घर-बाजार के लिए दे देना, कोई हर्ज नहीं, पर 5 मिनट अपने लिए निकालना। ध्यान-प्रार्थना के लिए भी निकालना। ज़िंदगी के आखिर में तुम पाओगे कि ध्यान में बैठकर तुमने जो समय गुजारा है, सिर्फ वही बचा है। बाकी सब गंवा दिया।

मंगल (ग्रह) पर जीवन है या नहीं, दुनिया में इस बात पर बहस चल रही है, लेकिन जीवन में मंगल है या नहीं, इस बात की किसी को फिक्र नहीं है। मैं निवेदन करूंगा कि मंगल पर जीवन ढूंढ़ने की बजाय जीवन में यदि मंगल ढूंढ़ा जाए तो ज़्यादा बेहतर होगा। जीवन मंगल है, मगर हमारी नासमझी के कारण वह दंगल बना हुआ है।

पत्नी और पैसा भक्ति के साधन हैं, भोग के साधन नहीं हैं। गृहस्थ जीवन में अकेला पुरुष हो या अकेली स्त्री हो समुचित भक्ति नहीं हो सकती। पुरुष को स्त्री की और स्त्री को पुरुष की ज़रूरत है। पति-पत्नी का सम्बन्ध परमात्मा की भक्ति के लिए और सम्पत्ति सेवा के लिए है, ना कि भोग के लिए। पुण्य के प्रभाव से अगर तुम्हें सम्पत्ति मिले तो अपनी सेवा के लिए भले ही नौकर रख लेना, लेकिन प्रभु की भक्ति, गुरु और मां-बाप की सेवा के लिए नौकर मत रखिए।

महावीर पेड़ के नीचे ध्यानमग्न थे। पेड़ पर आम लटक रहे थे। वहीं कुछ बच्चे भी खेल रहे थे। वे पत्थर फेंककर आम तोड़ने लगे। एक पत्थर महावीर को जा लगा और उनके सिर से रक्त बहने लगा। बच्चे डर गये। बोले : प्रभु! हमें क्षमा करें, हमारे कारण आपको कष्ट हुआ है। प्रभु बोले-नहीं, मुझे कोई कष्ट नहीं है। तो फिर आपकी आंखों में आंसू क्यों? महावीर ने बताया- पेड़ को तुमने पत्थर मारा तो इसने तुम्हें मीठे फल दिये, पर मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सका। इसलिए मैं दुःखी हूं।

भोजन में और सब कुछ हो, सिर्फ नमक न हो तो भोजन बेकार है। मंदिर में और सब कुछ हो, सिर्फ मूर्ति न हो तो मंदिर बेकार है। अस्पताल में और सब कुछ हो, सिर्फ डॉक्टर न हो तो अस्पताल बेकार है। गाड़ी में और सब कुछ हो, सिर्फ ब्रेक न हो तो गाड़ी बेकार है। जीवन में और सब कुछ हो, सिर्फ मन की शांति न हो तो जीवन बेकार है।

महिलाओं में चार आदतें होती हैं। झगड़ना, झगड़े में हार जायें तो रोना। रोते-रोते थक जायें तो सोना, सोकर उठना और पति से कहना- मैं मायके चली जाऊंगी तुम देखते रहना। आज शादियां असफल हो रही हैं, इसकी वजह है सहनशक्ति का न होना। पति पत्नी का सम्बंध तो एक पवित्र संबंध है और यह सम्बंध चार बातों पर जिया जाता है। 1- ट्रस्ट (विश्वास), 2- टाइम, 3- टॉकिंग और 4- टच।

संसार दुःख नहीं है। संसार के प्रति जो आसक्ति है, वह दुःख है। मकान में आग लगी। पिता जोर-जोर से रोने लगा। पड़ोसी ने कहा- यह मकान तो कल तुम्हारे बेटे ने बेच दिया था। पिता का रोना एकदम बंद हो गया। बेटा दौड़ता हुआ आया और बोला- पिताजी! मकान जल रहा है और आप...। पिता ने कहा- लेकिन तुमने तो यह मकान बेच दिया है ना। पुत्र बोला- बेचने की बात चली थी, मगर बिका नहीं। इतना सुनना था कि पिता फिर दहाड़ मारकर रोने लगा। अपनापन है, इसलिए रोना आता है।

विदेशी संस्कृति का सिद्धांत है खाओ, पिओ, मौज करो। रहो होटल में - मरो हॉस्पिटल में। जबकि भारतीय संस्कृति कहती है कि जिओ तो ऐसे जिओ कि शांति से मर सको और मरो तो ऐसे मरो कि मर कर भी याद रह सको। विदेशी जीवन मूल्य हमें सिर्फ 'लर्निंग' और 'अर्निंग' सिखाते हैं, जबकि भारतीय जीवन मूल्य लर्निंग-अर्निंग के साथ 'लिविंग' भी सिखाते हैं। जीवन की 72 कलाओं में जीने की कला सबसे महत्त्वपूर्ण है।

कठिनाइयों से घबराइए मत। रात से भयभीत हो गये तो सुबह कभी नहीं आयेगी। मजबूती से आगे बढ़िये। बस! सुबह होने को ही है। अपने मन को मजबूत कीजिए। कमजोर मन से यहां कुछ नहीं होता। याद रखें- मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। जो मन से हार गया, समझ लो उसकी नैया डूब गई और जो मन से मजबूत हो गया समझ लो वह सिकंदर बन गया।

बाप ने सोचा- गरीबी क्या होती है? बेटे को दिखाना चाहिए। बेटे को लेकर वह गांव गया दो दिन गरीबों के बीच रहा। पूछा- बेटे! गांव में गरीबों को देखकर क्या सीखा? बेटा बोला- पिताजी! हमारे पास एक कुत्ता है, उनके पास चार कुत्ते हैं, वे हमसे कितने अमीर हैं। हम हर चीज बाजार से लाकर खाते हैं, वे खुद उगाते हैं। वे हमसे कितने अमीर हैं। हमें ए.सी. में भी नींद नहीं आती। वे कहीं भी सो जाते हैं। वे हमसे कितने अमीर हैं। पिताजी! अच्छा हुआ हम गांव गये, वरना हमें पता ही नहीं चलता कि हम कितने गरीब हैं।

दुनिया में चार तरह के लोग हैं। एक वे, जिनका मानना है कि मेरा तो मेरा है ही, तेरा भी मेरा है। यह मिथ्यादृष्टि है। दूसरे वे, जिनका मानना है कि भाई! मेरा, मेरा है और तेरा, तेरा है। यह सम्यक् दृष्टि है। तीसरे वे, जिनका मानना है कि भाई! तेरा, तेरा ही है और मेरा भी तेरा है। यह संत-दृष्टि है और चौथे वे, जिनका मानना है कि न मेरा है- न तेरा है, ये सब एक झमेला है- यह हंस दृष्टि है। इन चारों में आप कौन हैं?

जिस घर को तुमने खून-पसीना एक करके बनवाया है। तुम देखना एक दिन डण्डा और कण्डा के साथ घर से बेघर कर दिये जाओगे। मुझ तरुणसागर का निवेदन सिर्फ़ इतना है कि ‘डण्डा’ और ‘कण्डा’ के साथ घर से निकाले जाओ, इससे अच्छा है कि पहले ही ‘पिच्छी- कमण्डल’ के साथ निकल जाओ या फिर पिच्छी-कमण्डलधारी संतों की सेवा में लग जाओ। कहिए! क्या ख्याल है?

क्रोध की कई किस्में हैं। एक 'बेहद-क्रोध' है, जो पत्थर पर खींची गई रेखा के समान होता है। दूसरा 'बहुत-क्रोध' है, जो ईंट की रेखा के समान होता है। क्रोध की एक तीसरी किस्म भी है, जो 'मामूली-क्रोध' कहलाती है। यह क्रोध रेत पर खींची गई रेखा के जैसा हल्का होता है। क्रोध की चौथी किस्म है 'मीठा-क्रोध', जो कि जल पर खींची रेखा के समान क्षणिक होता है। गृहस्थ जीवन में सिर्फ मामूली-क्रोध और मीठा-क्रोध ग्राह्य है। बेहद-क्रोध और बहुत-क्रोध हर हाल में त्याज्य हैं।

गली संकरी है। कोई राजा उससे निकल रहा हो और अचानक सामने से दौड़ता हुआ सांड आ जाये तो अब राजा क्या करेगा? क्या यह कहेगा कि ऐ सांड! तू हट जा। यह मेरी गली है। मैं यहां का राजा हूं तो सांड कहेगा- 'तू राजा, मैं महाराजा, आ जा।' राजा की समझदारी इसी में है कि या तो वह चबूतरे पर चढ़ जाये या पीछे हट जाये। दिनभर में हमें कई सांड मिलते हैं, पर हमें किसी से टकराना नहीं है, क्योंकि टकराव बिखराव का कारण है।

31 दिसंबर की रात हो। घर में चोर घुस आये और पुराने साल का कैलेंडर चुराकर ले जाये तो हमें दुःख नहीं होता, क्योंकि वह तो वैसे भी हटाना ही था। बचपन गुजर जाए, यौवन गुजर जाये तो दुःख किस बात का? सोचना, वह तो गुजरना ही था। सिर्फ इतना ध्यान रखना कि उम्र से बड़े हो गये तो अब भावनाओं से भी बड़े होना है। सत्य बोलना, सत्य सुनना और सत्य सोचना शुरू करना है।

कई बार मीडिया के लोग मुझसे पूछते हैं- आप इतना तेज क्यों बोलते हैं? मैं कहता हूं- लोग गहरी नींद सोए हुए है। उन्हें जगाना ज़रूरी है और जब कोई जागता है तो जगाने वाला दुश्मन नजर आता है। मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं, लेकिन मेरा मानना है कि जो लोग कुंभकर्ण की नींद सोये हुए हैं उन्हें जगाने के लिए शेर जैसी दहाड़ और हाथी जैसी चिंघाड़ चाहिए। इसलिए मैं तेज बोलता हूं। धीरे बोलो तो लोग सोते हैं। मैं क्या करूं?

मैं किसी को झूठी तसल्ली नहीं देता, क्योंकि झूठी तसल्ली देर-सबेर चिंता का कारण बन जाती है। मैं किसी भ्रम में नहीं रहता और न ही अपने श्रोता को भ्रम में रखता हूं। जो सच है, वह कहता हूं क्योंकि किसी-ना-किसी को तो आदमी को उसकी असली तस्वीर दिखानी होगी। सोचता हूं मैं ही क्यों न दिखा दूं और जब मैं तस्वीर दिखाता हूं तो लोग कहते हैं मुनिश्री बड़ा कड़वा बोलते हैं। कड़वे प्रवचन देते हैं। कड़वे प्रवचन देना मेरा शौक नहीं, मजबूरी है।

मैं कर्नाटक में था। प्रवचन के लिए जा रहा था कि कुछ लोग कार में सवार प्रवचन स्थल की ओर तेजी से बढ़ रहे थे। मेरे पास से मर्सीडीज कार वाला एक सेठ गुजरा। मैंने कहा-ऐ सेठ! तेरे पास मर्सीडीज कार है तो मेरे पास नमोकार है। तेरी कार तो कभी भी धोखा दे सकती है, लेकिन मेरा नमोकार कभी धोखा नहीं देता। हां, कार और नमोकार में एक बात की समानता है कि कार में पैट्रोल न हो तो कार बेकार है और नमोकार के प्रति श्रद्धा न हो तो नमोकार भी बेकार है।

संत और सूर्य कभी एक जगह नहीं टिकते। ये जहां जाते हैं, अंधकार मिटाते हैं और रोशनी फैलाते हैं। संत बहता पानी और चलती हवा जैसा होता है। संत तो सुगंध है। सुगंध फैलाने का काम हवा का है। संत की महिमा बताने का काम श्रावक का है। संत एक नई सुबह का आगाज है। जो साधना में है, वो संत है। जो साधना में नहीं है तो समझना पेट भरने वालों की जमात है।

पैसा जेब में रखो, दिमाग में नहीं। दिमाग में पैसा रखोगे तो दिमाग होगा सातवें आसमान पर और तुम होओगे सातवें नरक में और पैसा जेब में होगा तो दुनिया तो होगी तुम्हारी जेब में और तुम होओगे दुनिया की जेब में। पैसा जेब में है तो पैसा हाथ का मैल है और पैसा दिमाग में है तो पैसे के सामने रिश्ते-नाते सब फेल हैं। पैसा 'कुछ' हो सकता है, 'बहुत कुछ' हो सकता है, पर 'सब कुछ' नहीं।

एक आदमी था। गंगा किनारे खड़ा था। सर्दी का मौसम था। सर्दी की वजह से नहाना नहीं चाहता था कि अचानक उसका पांव फिसल गया और वह गंगा में गिर गया परंतु गिरते-गिरते वह जोर से चिल्लाया- हर-हर गंगे। वहां मौजूद लोगों ने समझा इसकी श्रद्धा कमाल की है, इतने ठंडे पानी में नहा रहा है। दुर्घटना को भी अवसर बनाना सीखना है और गिरो भी तो कुछ उठाकर ही उठना है। खाली हाथ नहीं उठना है।

तर्क न करें, क्योंकि तर्क से तकरार बढ़ती है। समर्पण से सौहार्द बढ़ता है। तर्क सिर्फ उलझाता है। समर्पण समाधान देता है। सास ने कहा-यों। बहू ने कहा-क्यों? बस यहीं से महाभारत शुरू हो जाती है। जो सुख समर्पण में है, अकड़ में कहां? जो सुख झुकने में है, वो तनने में कहां? तर्क नर्क है। समर्पण स्वर्ग है। समर्पण में जिएं।

तुम्हारे सिवा, तुम्हारा यहां कुछ भी नहीं है। जो तुम्हारा है, उसे तुमसे कोई छीन नहीं सकता और जो तुम्हारा नहीं है, उसे किसी से छीनकर तुम्हारा बनाया नहीं जा सकता। और हां! एक बात और याद रखना : तुम केवल 'तुम' हो। तुम्हारे जैसा दुनिया में दूसरा कोई नहीं है। तुम्हारे अंगूठे की रेखाएं किसी से नहीं मिलती। तभी तो हस्ताक्षर के रूप में अंगूठा लगवाया जाता है।

दिन की शुरुआत प्रसन्नता और प्रणाम से करिए। जो व्यक्ति सुबह उठते ही एक मिनट भी मुस्कुराता है, उसे पूरे दिन का पावर टॉनिक मिल जाता है और जो व्यक्ति मां-बाप, गुरु और प्रभु के चरणों में घुटने टिकाता है, उसे ज़िंदगी में कभी किसी के सामने घुटने नहीं टेकने पड़ते। जिसके पास दुआओं की दौलत है, सही मायने में वही अमीर है। इस दौलत की बदौलत ही व्यक्ति दौलतमंद होता है।

मैं शुरू के दस साल बहुत मीठा बोला, मगर उस मीठे बोलने का असर यह होता कि लोग सोते थे। उस समय मुझे सुनने के लिए इस तरह हज़ारों लोग नहीं आते थे। बमुश्किल 25-50 लोग होते थे। 25-50 वे, जिनको बहू घर पर नहीं टिकने देती और बेटा दुकान पर नहीं चढ़ने देता था। वे आते और कथा में सोते। मुझे बहुत बुरा लगता। मैं पूछता-सेठजी! सो रहे हो क्या? सेठजी कहते-नहीं तो। मैं झूठा पड़ता। फिर मैं पूछता-सेठजी जाग रहे हो क्या? वे कहते-नहीं तो। जब जाकर दूध का दूध और पानी का पानी होता था।

स्प्रिंग को कितनी देर दबाकर रखोगे? स्प्रिंग यानि मन। आदमी का मन भी चंचल है। वह कभी कहीं टिकता नहीं है, वह घड़ी के पेंडुलम की तरह इधर-उधर भटकता ही रहता है। तन कहीं और होता है और मन...? तन मंदिर में भी होता है तो मन भोजनशाला के चक्कर लगाता रहता है। मन, मंदिर में भगवान की कृपा पाने जाए यह तो ठीक है, लेकिन उसने तो मंदिर को ही अखाड़ा बना डाला है।

जो गरीबों, अशिक्षितों और शोषितों को अपना मित्र बनाता है, वही संत होता है, क्योंकि वह ईश्वर के सबसे निकट होता है। देश में गरीबी नहीं, गैर बराबरी है। 100 करोड़ जनसंख्या वाले देश में 2-3 सौ घरानों में सम्पदा सिमट जाए तो गरीबी तो बढ़ेगी ही। यह देश सोने की चिड़िया है, फिर गरीब कैसे हो सकता है?

अहिंसा धर्म का प्रथम द्वार है और सौहार्द का महोत्सव है। हिंसा कभी धर्म नहीं हो सकती, फिर भले ही वह किसी देवी-देवता के नाम से क्यों न की गई हो। अहिंसा और सत्य भारत के सर्वोच्च सिद्धांत रहे हैं। देश की मुहर में भी 'सत्यमेव जयते' लिखा है। मेरा मानना है कि जब तक किसी मनुष्य या जानवर की आंख में आंसू रहेंगे, तब तक हमारा अहिंसा और सत्य का सिद्धांत अधूरा है। हमें इस सिद्धांत को आगे ले जाना है।

हाथ से छूटे उसका नाम त्याग है और हृदय से छूटे उसका नाम वैराग्य है। त्याग से वैराग्य बड़ा है। जो तन और धन को संभालने में लगा हो, वह संसारी है और जो मन और जीवन को संभालने में लगा है, वह संन्यासी है। अपना तन और धन परिवार को दे देना। कोई चिंता नहीं। मगर अपना मन सिवाय अपने प्रभु के और किसी को मत देना। मन दुनिया को दिया तो मन खट्टा हो जायेगा। मन पर मर्जी सिर्फ़ मालिक की रखना।

मीरा भक्ति में मग्न थी, भजन गा रही थी। सभा में कोई संगीतज्ञ बैठा रहा होगा। संगीतज्ञ के हिसाब से भजन में, लय-ताल में तालमेल नहीं बैठ रहा होगा। सो उसने सामने दीवार पर लिख दिया. राग में गाया करो। मीरा की समाधि टूटी। भजन पूरा हुआ। सामने लिखा- पढ़ा तो मीरा ने उसमें एक शब्द जोड़ दिया-अनुराग में गाया करो। राग में गाने से जगत प्रसन्न होता है। अनुराग में गाने से जगदीश प्रसन्न होता है। अब क्या करना है? निर्णय तुम्हें करना है।

जीवन में कैसा भी दुःख और कष्ट आये पर भक्ति मत छोड़िए। क्या कष्ट आता है तो आप भोजन करना छोड़ देते हैं? क्या बीमारी आती है तो आप सांस लेना छोड़ देते हैं? नहीं ना। फिर जरा-सी तकलीफ आने पर आप भक्ति करना क्यों छोड़ देते हो? कभी भी दो चीज मत छोड़िए-भजन और भोजन। भोजन छोड़ दोगे तो जिंदा नहीं रहोगे। भजन छोड़ दोगे तो कहीं के नहीं रहोगे। सही मायने में भजन ही भोजन है।

वस्त्र गंदा हो गया तो साबुन से धो लोगे, लेकिन मन गंदा हो तो? मन को धोने के लिए सत्संग है। सत्संग के साबुन से मन धुलता है। लोग मंदिर जाते हैं तो कपड़े बदलकर जाते हैं, साफ़-सुथरे कपड़े पहनकर जाते हैं, लेकिन मैं कहना चाहता हूं सिर्फ कपड़े बदलकर न जाइये, बल्कि अपना मन भी बदलकर जाइये। कारण कि प्रभु तुम्हारे कपड़े नहीं देखते, वह तुम्हारे मन को देखते हैं कि कैसा शुद्ध मन लाया है।

++++

गायक और वादक में तालमेल होना चाहिए। दोनों में तालमेल होगा तो संगीत में रस आयेगा, मन झूम उठेगा। तालमेल नहीं होगा तो संगीत महज शोरगुल बनकर रह जायेगा। सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए पति-पत्नी में भी तालमेल ज़रूरी है। दोनों के स्वभाव, विचार और पसंद में सामंजस्य ज़रूरी है। अगर इनमें 36 का आंकड़ा रहा तो घर में महाभारत अवश्यंभावी है। पति-पत्नी का स्वभाव पानी की तरह हो, जो हर जगह घुल-मिल जाये।

संत ने एक व्यक्ति से समय पूछा। व्यक्ति दुष्ट स्वभावी था। उसने संत के सिर पर एक डंडा मारा और कहा-बाबा! एक बज रहा है। संत दुःखी होने के बजाय बड़े खुश हुए, खुशी के मारे नाचने लगे। किसी ने पूछा. बाबा! पागल हो गये क्या? उसने डंडा मारा और आप नाच रहे हैं क्यों? संत ने कहा. मैं प्रभु को धन्यवाद दे रहा हूं कि अच्छा हुआ, एक घंटे पहले समय नहीं पूछा वरन् ये 12 डंडे मारता। जो हर हाल में राजी है, उसे कोई दुःखी नहीं कर सकता।

सच्चा भगत दुनिया की परवाह नहीं करता। दुनिया उसके विषय में क्या सोचती है? क्या बोलती है? उसे फिक्र नहीं होती। वह तो परमात्मा से कहता है- 'हे प्रभु! जिसमें तेरी रजा, उसमें मुझको मजा।' जगत और भगत में कभी मेल नहीं हो सकता। जगत साधनों में जीता है और भगत साधना में जीता है। साधनों में जीने वाला मौत पाता है और साधना में जीने वाला मोक्ष पाता है।

गलती करो, गलतियां करो। दो बार करो, चार बार करो। बस इतना ध्यान रखो कि एक गलती को दुबारा मत करो। गलतियां उन्हीं से होती हैं, जो कुछ करने की कोशिश करते हैं। गिरते भी वही हैं, जो चलते हैं। गलती से सबक लो। गलती से सबक न लेना सबसे बड़ा गधापन है। गलती से गिरो भी तो बॉल की तरह, जो जमीन पर गिरती है तो फिर उछल पड़ती है। न कि उस मिट्टी के लोंदे की तरह, जो गिरता है और वहीं चिपक जाता है। गलती को सुबह-सुबह मत दोहराओ। दोहराना ही है तो दोपहर के बाद।

कुदरत की व्यवस्था है कि तुम मां-बाप का चुनाव तो नहीं कर सकते, लेकिन अपने दोस्तों का चुनाव तो कर ही सकते हो। जो बुरी आदत में डाले, व्यसन सिखाए और बुरे समय में साथ छोड़ दे, वह कभी सच्चा दोस्त नहीं हो सकता। जो रक्षा करे, भली बात सिखाए और सम्बल दे, वही सच्चा दोस्त है। फिर भले ही वह कड़वा बोलता हो। मैं तुम्हारी पीठ नहीं थपथपाऊंगा। मेरे पास आओगे तो 'कोड़े' ही बरसेंगे।

जीवन एक युद्धक्षेत्र है। तुम सब योद्धा हो। यहां हर किसी को जीवन से लड़ना होता है। जीवन में मुसीबतें भी आती हैं। उनसे लड़ना सीखो। मुसीबतों के सामने झुकने और घुटने टेकने से काम नहीं चलेगा। जीवन में आई चुनौतियां भी एक चुनाव है। चुनाव का सामना तो करना ही होगा। हालांकि यह पैराशूट लेकर विमान से कूदने जैसा साहस भरा काम है। तुम्हें इस निराशा के चक्र से बाहर निकलना होगा कि मैं कुछ नहीं कर सकता।

क्रोध इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन है। क्रोध एक बार दिमाग पर हावी हो गया तो दीवाला निकालकर ही दम लेता है। क्रोध जहां है, वहां दीवाली कैसी? वहां तो दीवाला ही होगा। हर क्रोधी को एक दिन क्रोध का खामियाज़ा उठाना पड़ता है। इसलिए क्रोध करें भी तो रोज नहीं, सप्ताह में एक दिन। कभी-कभी करोगे तो सामने वाले पर उसका असर भी पड़ेगा। रोज दिन में दस बार क्रोध करोगे तो सामने वाला कहेगा - इनकी तो चिल्लाने की आदत पड़ गई है।

जिसे सोने के लिए नींद की गोली नहीं खानी पड़ती है और जागने के लिए अलार्म की ज़रूरत नहीं पड़ती, वह दुनिया का सबसे सुखी इंसान है। जो फर्ज निभाता है लेकिन किसी का कर्जदार नहीं है, वह सुखी है। जो अपनी मेहनत पर भरोसा रखता है और हर परिस्थिति में मुस्कराता है, वह सुखी है। आज पानी पिलाने के लिए नौकर। खाना बनाने के लिए नौकर। झाड़ू-पोंछा लगाने के लिए नौकर। मां-बाप बूढ़े हो गये तो उनकी सेवा के लिए नौकर। मुझे तो डर लगता है कि कहीं कल ऐसा ना हो कि पत्नी से प्यार करने के लिए भी नौकर रखना पड़े।

चोर कई प्रकार के होते हैं। जो ताला तोड़कर माल ले जाये, वो चोर। जो मेहनत कम करे मुनाफ़ा ज़्यादा ले, वो चोर। जो अतिथि को बिना खिलाए पहले खुद खाये, वो चोर। जो जिसका है उसका हक ना दे, वो चोर। जो मां-बाप की सेवा ना करे, वो चोर। जो आंगन आए भिखारी को भिक्षा न दे, वो चोर। जो अपने हिस्से का काम किए बिना खाए, वो चोर। पति, पुत्र, पिता होकर भी अपने पति कर्तव्य, पुत्र कर्तव्य, पिता कर्तव्य को ना निभाए, वो चोर अब आप बताइए, आप कौन से चोर हैं?

मन को कमजोर मत करो। हिम्मत मत हारो। शरीर कमजोर हो और मन मजबूत हो तो काम चल जायेगा, लेकिन मन कमजोर हो और शरीर मजबूत हो तो काम नहीं चलेगा। ज़िंदगी में चुनौतियां तो मिलेंगी। कालीदास को चुनौतियां मिलीं, तुलसीदास को चुनौतियां मिलीं, कबीरदास को चुनौतियां मिलीं। तुम्हें भी चुनौतियां मिलेंगी। प्रकृति ने हमें कुछ करने को जन्म दिया है, इसलिए मन को कभी कमजोर मत होने देना। मन को छोटा नहीं, विश्वास भरा बनाइए। पांव में जूते नहीं तो दिल छोटा मत कीजिए, क्योंकि दुनिया में हजारों लोग ऐसे हैं जिनके पांव ही नहीं हैं।

बच्चों को जंगल के पौधे की तरह बनाएं, घर के गमले की तरह नहीं, ताकि कोई उन्हें पानी न भी दे तब भी वे अपने बलबूते फल-फूल सकें। बच्चे सिखाने से नहीं सीखते, वे दिखाने से सीखते हैं। घड़ी और कैलेण्डर की गुलामी से अपने को मुक्त कर लेने वाले बच्चे ही अपने जीवन में सफल होते हैं। सफलता के लिए जीवन में 'लाइन ऑफ कन्ट्रोल' ज़रूरी है। जीवन में कितने भी ऊंचे उठ जाओ, तो भी अपने धर्म को मत त्यागो।

दुनिया में सब चोर ही चोर हैं। बस फर्क इतना है कि एक होता है कच्चा चोर और एक पक्का चोर। जो चोरी करता पकड़ा जाये, वह कच्चा चोर है और जो इतनी सफाई से चोरी करे कि कभी पकड़ा ही न जाये, वह पक्का चोर है। जिन्होंने बड़ी-बड़ी चोरियां कीं, वे बड़े उद्योगपति बन गये। जिन्होंने टुच्ची-मुच्ची, छोटी-मोटी चोरियां कीं वे छोटे व्यापारी बन गये और जिन्हें चोरी का मौका नहीं मिला, वे तथाकथित ईमानदार बन गये। आज हम ईमानदार भी मजबूरी में हैं, चूंकि बेईमानी का मौका ही नहीं मिला।

पति-पत्नी के रिश्ते का आधार आपसी विश्वास है। हालांकि हर रिश्ता विश्वास की बुनियाद पर टिका है, पर इस रिश्ते में विश्वास सर्वोपरि है। बिना विश्वास के यह रिश्ता टिक नहीं सकता और अंधों की नगरी में दर्पण बिक नहीं सकता। ज़िंदगी में जो महत्त्व श्वास का है, रिश्तों में वही महत्त्व विश्वास का है। श्वास के बिना आदमी जिन्दा नहीं रह सकता और विश्वास के बिना रिश्ते जिन्दा नहीं रह सकते।

धर्म और युवा दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। महावीर पृथ्वी के पहले दार्शनिक हैं, जिन्होंने धर्म को युवा से जोड़ा, क्योंकि धर्म के लिए ऊर्जा चाहिए और युवा ऊर्जा का भंडार है। धर्म बुढ़ापे की औषधि नहीं, युवा होने का टॉनिक है। युवा शब्द को पलट दें तो वायु बनता है। जो वायु की तरह गतिशील है, वह युवा है। नदी को छुट्टी, हवा को विश्राम और सूर्य को कोई अपेक्षा नहीं, ठीक इसी तरह युवा के लिए कुछ भी असंभव नहीं।

एक सज्जन मुझसे कह रहे थे- क्रोध जाता नहीं है। क्या करूं? मैंने कहा, कुछ मत कर। सिर्फ एक काम कर, जब भी क्रोध आए, अपने नौकर को 100 रुपये दे दिया कर। दिन में 20 बार क्रोध करना और रात में हिसाब लगाना कि नौकर को कितने रुपये दिए। अगले दिन कोशिश होगी कि 1500 रुपये ही जाएं और एक दिन कोशिश करोगे कि 100 रुपये ही जाएं और फिर सोचोगे 100 रुपये भी क्या फोकट में आते हैं। भला! ये भी क्यों जाएं? याद रखो : क्रोध बड़ा महंगा सौदा है।

एक राजा बीमार पड़ गया। उपचार किया, लेकिन ठीक नहीं हुआ। किसी ने कहा- राजा को ऐसे व्यक्ति के वस्त्र पहनाओ जो हर तरह से सुखी हो, राजा ठीक हो जायेगा। सैनिक ऐसे व्यक्ति की तलाश में चारों दिशाओं में दौड़े, लेकिन सब तरफ निराशा ही हाथ लगी, क्योंकि हर व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में दुःखी था। एक दिन मंत्री ने दूर से देखा कि एक व्यक्ति चला आ रहा है। उसके चेहरे पर संतुष्टि और आनंद झलक रहा था। वह संसार का सबसे सुखी इंसान लग रहा था, लेकिन वह व्यक्ति जब पास आया तो मंत्री देखकर हतप्रभ रह गया, क्योंकि वह एक दिगम्बर मुनि था।

सच्चाई दो तरह की होती है- व्यावहारिक सच्चाई और वास्तविक सच्चाई। ये बीवी-बच्चे, मकान-दुकान मेरे हैं- यह व्यावहारिक सच्चाई है। वास्तविक सच्चाई तो यह है कि ये शरीर भी तेरा नहीं है। सिकन्दर को इस सच्चाई का अनुभव जीवन के अन्तिम क्षणों में हुआ। उसने अपने आदमियों को आदेश दिया- जब मेरी अर्थी निकाली जाए तो मेरे दोनों हाथ अर्थी से बाहर रखें ताकि दुनिया देख सके कि सिकन्दर ने बटोरा तो बहुत, पर खाली हाथ जा रहा है।

तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव नहीं है। तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि मैं यह नहीं कर पाऊंगा। मैं कहता हूं तुम्हारे लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं है। इन नकारात्मक विचारों के ऊपर आज ही ‘फुल-स्टॉप’ लगा दीजिए। आज, अभी और इसी वक्त, और हर रात सोने से पहले और हर सुबह काम शुरू करने से पहले कहिये- मैं कर सकता हूं, मुझे करना चाहिए, मैं करूंगा (I can, I must, I will)। इस वाक्य को अपना आदर्श बनाइए और इस विश्वास के साथ आगे बढ़िए कि कुछ भी आपकी पहुंच के बाहर नहीं है।

एक सुस्त इंसान था। खेत में मजे से पड़ा था। किसी ने कहा-भाई! खेती क्यों नहीं करते। सुस्त इंसान ने उससे पूछा-उससे क्या होगा? हित-चिंतक ने कहा-अरे भाई! खेती होगी तो बहुत सारी कमाई होगी। आलसी बोला- ज़्यादा कमाई हो जायेगी तो क्या हो होगा? व्यक्ति बोला-घर परिवार होगा। वह व्यक्ति बोला- उससे क्या होगा? उस समझदार आदमी ने कहा-फिर आराम से रहना। आलसी ने करवट बदलते हुए कहा- तो अभी मैं क्या कर रहा हूं? इस तरह के मूर्खों और मुर्दों से समाज और देश का भला होने वाला नहीं।

आपने अपने पति से कई बार झगड़ा किया होगा। अब मेरे कहने पर एक बार झगड़ा और करो। अगर तुम्हारा पति शराब पीता है, गुटखा खाता है, सिगरेट पीता है, जुआ खेलता है, तो अपने पति से साफ-साफ कह दो या तो अपनी बुरी आदत सुधारो, वरना इस घर में या तो आप रहेंगे या मैं रहूंगी। जिस तरीके से आप सुधार सकती हैं, वही तरीका अपनाएं, क्योंकि आप पति की अर्धांगिनी हैं। धर्म पत्नी वही है, जो अपने पति को धर्म के रास्ते पर ले जाये।

आज तुम्हारा जन्मदिन है तो इस जन्मदिन को कुछ अलग ढंग से मनाना। इस बार का जन्मदिन कुछ इस तरह से मनाना कि झोपड़पट्टी या गरीब बस्ती में जाना और वहां किसी गरीब की छोटी बच्ची को गोद लेना और उसके नाम बैंक में 15 हजार रुपये डालना। जब वह बच्ची शादी लायक हो जायेगी तो तुम्हारे 15 हजार रुपये भी बढ़कर लगभग 1 लाख हो जायेंगे। फिर तुम उन रुपयों से उसकी शादी कर देना। बस यही जन्मदिन का तुम्हारा तोहफ़ा होगा।

मुनिश्री! पत्नी से मेरी बनती नहीं, बच्चों से भी बनती नहीं। नौकर-चाकर से भी मेरी बनती नहीं है। मैं सोचता हूं क्यों न मैं आपके संघ में सम्मिलित हो जाऊं। क्या आप मुझे संघ में रखेंगे? मैंने कहा- तुम्हारी पत्नी से बनती नहीं, बच्चों से बनती नहीं। नौकर-चाकर से भी नहीं बनती तो फिर मुझ तरुणसागर से बन जायेगी। इसकी क्या गारंटी है? क्योंकि मेरा तो तुमसे दूर-दूर का कोई रिश्ता नहीं। स्थान बदलने से कुछ नहीं होगा, अपना स्वभाव बदलना होगा।

अंग्रेजी बहू थी। हिन्दी जानती नहीं थी। एक दिन उसकी सास ने नौकरानी को गधी कह दिया। बहू ने अपने पति से पूछा-'गधी' इसका क्या अर्थ होता है। पति ने बताया 'मोटी'। अगले दिन सास ने फिर अपनी नौकरानी को डांटा और कहा- उल्लू की पट्ठी। बहू ने फिर अपने पति से इसका अर्थ पूछा। पति ने पत्नी से पीछा छुड़ाते हुए कह दिया 'दुबली-पतली'। कुछ दिन बाद सास बीमार पड़ गई। बहू ने सास को देखा और बोली-अम्माजी! पहले आप कितनी गधी थीं। आजकल तो बिलकुल उल्लू की पट्ठी हो गई हैं। अपना किया कर्म एक दिन लौटकर ज़रूर आता है।

कहते हैं शक का इलाज नहीं है। सच है, शक का इलाज हकीम लुकमान के पास भी नहीं था। एक बार शक का कीड़ा दिमाग में घुस जाए तो फिर घुसता ही जाता है और दिमाग का दिवालिया निकालकर ही दम लेता है। एक आदमी की पत्नी शक्की मिज़ाज की थी। एक दिन पति के कोट पर लम्बे बाल ढूंढने लगी। जब उसे बाल नहीं मिले तो बोली : अच्छा! तो तुम आजकल गंजी औरत से इश्क फरमा रहे हो। सच! शक का कोई इलाज नहीं।

संसार में सुखी रहना है तो ‘एडजस्टमेंट’ करना सीखिए। जो अपने को परिस्थिति के अनुकूल एडजस्ट नहीं कर सकता, वह सब जगह से रिजेक्ट हो जाता है। संसार में सब कुछ अपनी मर्जी का नहीं होता। कुछ औरों की मर्जी का भी होगा। इसके लिए तैयार रहिए। जैसी स्थिति हो, वैसी अपनी मनःस्थिति बना लीजिए। यही सुखी रहने का रहस्य है। जो परिस्थिति के अनुरूप अपने आप को नहीं ढाल सकता तो फिर उसे तो आत्महत्या कर लेनी चाहिए, क्योंकि इसके अलावा उसके लिए और कोई चारा नहीं है।

मां-बाप होना जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना है। औलाद के प्रति मां-बाप की जिम्मेदारी भारत के प्रधानमंत्री से भी अधिक है। यदि मां-बाप अपने बुजुर्ग मां-बाप का यथोचित सम्मान नहीं करते तो उन्हें अपने बच्चों से भी मान-सम्मान की अपेक्षा रखने का कोई हक नहीं है। बच्चों से ज़्यादा मोह मत रखिए, क्योंकि कल आपका बेटा पड़ोसी भी बन सकता है। आपको बच्चों का मालिक नहीं, ट्रस्टी (संरक्षक) बनना होगा। बच्चे कहना नहीं मानते तो उन्हें बार-बार मत समझाइए, ठोकर लगेगी तो अपने आप सीख जायेंगे।

आपको पता होना चाहिए कि पैसा रास्ता है, मंजिल नहीं है। पैसा पैसा है, मालिक नहीं। वह 'कुछ' तो हो सकता है,'बहुत कुछ' भी हो सकता है, लेकिन 'सब कुछ' कतई नहीं हो सकता और जिन्होंने पैसे को ही सब कुछ माना, वे जीवन के आखिर में रोये हैं। रक्त और पैसा एक समान है। दोनों को बहते रहना चाहिए। कुछ लोग पैसे के मालिक होते हैं और कुछ लोगों का पैसा। आप क्या हैं?

हमेशा याद रखो- जो तुम देते हो, वही तुम पर लौटकर आता है और कई गुना होकर लौटता है। हर किसान यह नियम जानता है, मानता है और इस पर काम करता है। वह खेत में अच्छे व बेहतरीन बीज बोता और परिणाम देखता है। फल आने का इंतजार करता है। संसार तो एक प्रतिध्वनि मात्र है, जो आज संसार को दोगे, संसार वही आपको वापिस लौटा देगा। फल फूल ले आते हैं और कांटे। कांटे बटोरने से काम नहीं चलेगा। जो आपको चाहिए, वह बांटना शुरू कर दीजिए।

गृहस्थ का घर भोग भूमि है। घर में काम के परमाणु घूमते रहते हैं और मन को बिगाड़ते हैं। इसलिए ज़्यादा नहीं, साल में एक महीने के लिए घर छोड़ दीजिए। किसी तीर्थ पर चले जाइए और वहां पर भजन करिए। मन को शांति मिलेगी। गृह त्याग करने से गृह दशा सुधरती है, ऐसा मेरा मानना है। जिसमें आप रहते हैं वह घर, वह बंगला, वह महल भी आखिर एक दिन छोड़ना है- इस बात को मत भूलिए।

मत भूलो कि एक दिन सब छोड़कर जाना है। मर गए तो नौकर-चाकर हाथ बांधे खड़े रहेंगे, तिजोरी पड़ी रहेगी और महल-अटारी खड़ी रहेगी। पत्नी रोते हुए गली के मोड़ तक आपको छोड़ आएगी और अर्थी के साथ चलने वाले कहेंगे- भैया! जरा जल्दी करो, दुकान भी खोलना है, ऑफिस भी जाना है। ज़्यादा लकड़ी लगाओ और जल्दी जलाओ। श्मशान तक चलने वाले चार, चालीस, चार सौ और चार हजार भी मिल जाएंगे, पर श्मशान से आगे चलने वाले ज़िंदगी में किए शुभ-अशुभ कर्म ही होंगे।

हमारी बहनों को भी बहुत गुस्सा आता है। झगड़ा करेंगी तो सास से और गुस्सा उतारेंगी बच्चों पर, लेकिन मेरा मानना है कि आपसी समझ से झगड़े को सुलझाया जा सकता है। पति-पत्नी में किसी बात पर बहस हो गई। विवाद इतना बढ़ गया कि पत्नी रूठ गई और कह दिया लो सम्हालो अपनी घर-गृहस्थी। मैं चली अपने मायके। पति समझ गया। मामला गंभीर है। रुख बदला और बोला- ठीक है, तुम अपने मायके चली जाओ। हम भी ससुराल घूम आयेंगे और बच्चे भी अपनी ननिहाल में रह आयेंगे।

शादी के समय सात फेरे लेने की रस्म है। वर-वधू सात फेरे लेकर जीवन की गाड़ी को ठीक प्रकार से चलाने का संकल्प लेते हैं। मेरा मानना है कि सात फेरों के अलावा एक और आठवां फेरा भी होना चाहिए। यह आठवां फेरा भ्रूण हत्या रोकने के लिए होना चाहिए। वर-वधू संकल्प करें कि वह कभी भी भ्रूण-हत्या नहीं करेंगे। जब तक देश में कन्या का जन्म पुत्र-जन्म की तरह स्वागत योग्य नहीं माना जाता, तब तक हमें मानना होगा कि भारतीय समाज पक्षपातीय पक्षपात से ग्रस्त है।

अगर आप सास हैं तो अपनी बहू को इतना प्यार दीजिए कि वह अपने पीहर के फोन नम्बर ही भूल जाए और अगर आप बहू हैं तो प्रवचन सुनने के बाद ड्रेसिंग टेबल पर रखी सौन्दर्य प्रसाधन की चार-छह शीशियां तो कम होनी ही चाहिए। अगर आप बेटे हैं तो ऐसा आदर्श जीवन जिएं कि दुनिया तुम्हारे मां-बाप से पूछे कि किस पुण्य के उदय से तुमने ऐसी औलाद पायी है और अगर आप बाप हैं तो अपने जीवन से अपने जवान बेटे को यह विश्वास दिला देना कि अब बेटे को तिजोरी की चाबी पाने के लिए उसे बाप की मृत्यु का इंतजार नहीं करना पड़ेगा।

क्रोध आग है। क्रोध की आग बड़ी खतरनाक होती है। पता नहीं कब किसके क्रोध की आग भड़क जाए और उस आग से परिवार की खुशियां धू-धू करके जलने लगे। इसलिए अपने घर में थोड़े से जल की व्यवस्था रखिए। जल यानि क्षमा और सहनशीलता। सहनशील बनिए। अपने में सहिष्णुता पैदा करिए। यहां कहने वालों की कमी नहीं है, अपितु सहने वालों की कमी है। कहने वाले कहेंगे। अगर तुममें सहने की शक्ति नहीं है तो घर-परिवार में रोज, कलह, क्लेश होंगे। यहां गालियों का गोबर हजम करना पड़ता है, हमेशा प्रशंसा की मिठाई नहीं मिलती।

मैं एक प्रश्न पूछता हूं : 'मुखाग्नि' किसे कहते हैं? तुम कहोगे जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो उसकी चिता को जो अग्नि दी जाती है, वह मुखाग्नि है परन्तु मैं कहता हूं वह 'मुखाग्नि' नहीं, बल्कि वह तो 'चिताग्नि' है। अरे! असली मुखग्नि तो वह है जब कोई व्यक्ति बीड़ी-सिगरेट पीता है और उसके मुख में जो अग्नि होती है, वह सही मायने में मुखाग्नि है। जो आदमी बीड़ी-सिगरेट पी रहा है, वह जीते-जी खुद अपने को मुखाग्नि दे रहा है।

आज का आदमी रहता तो है ए.सी. में, पर दिमाग में हीटर लगा हुआ है। अगर आप जीवन में सफल होना चाहते हैं तो सिर पर आइस-फैक्ट्री और मुंह पर शुगर-फैक्ट्री रखिए। व्यक्ति अगर दिमाग की गर्मी को हटाए और जुबान में नरमी लाए तो परिवार में बल्ले-बल्ले हो जाए। सवाल है : क्रोध कब आता है? जब अपेक्षा की उपेक्षा होती है तब क्रोध आता है। हम अपेक्षा ही न रखें तो फिर उपेक्षा कौन कर सकता है। सावधान : आपका एक मिनट का गुस्सा पूरा भविष्य बिगाड़ सकता है।

भरत राम को मनाने वन चला। रास्ते में गंगा पड़ी। सबने स्नान किया फिर यमुना पड़ी, उसमें भी सबने स्नान किया। आखिर में सरस्वती नदी आई। सबने स्नान किया। भरत ने स्नान नहीं किया। लोगों ने पूछा : महाराज! आपने स्नान क्यों नहीं किया? तब भरत ने कहा : मैं इस नदी में स्नान नहीं करूंगा, क्योंकि इसने मेरी माँ को ऐसी कुबुद्धि दी कि उसने मेरे भाई को वनवास भेज दिया। भरत राम के पास पहुंचा तो राम ने कहा ः:बोल भरत! तुझे कौन-सा पद चाहिए? तब भरत ने कहा-प्रभु! मुझे पद नहीं, पादुका चाहिए। जिसे प्रभु के पद मिल गये, उसे दुनिया में पद तो स्वतः ही मिल जाते हैं।

सुखी जीवन के लिए मेरी तीन बातें याद रखो। एक बात : ठीक ढंग से रहना आ जाए। दो बात : ठीक ढंग से अपनी बात कहना आ जाए और तीन : ज़रूरत पड़ने पर सहना आ जाए। हमें ठीक ढंग से रहना नहीं आता। हमें कहना भी नहीं आता और सहना तो आता ही नहीं है। बच्चों को माँ-बाप कुछ कहते हैं तो बच्चों को सहन नहीं होता और घर से भाग जाते हैं।

लोगों में कैसी अज्ञानता है। वे धर्म के नाम देवी-देवताओं के समक्ष पशुओं की बलि देते हैं। उनकी दलील होती है कि माता ने भी तो महिषासुर को मारा था। उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि माता ने महिष नामक असुर को मारा था और तुम महिष अर्थात् भैंसे का वध कर रहे हो। बकरों को मार रहे हो। तुम्हें शर्म आनी चाहिए, इन बेजुबानों को मारते हुए। याद रखना : ये जानवर बेजुबान तो हैं, लेकिन बेजान नहीं हैं और ऐसी कौन-सी माँ होगी, जो अपने बच्चों का खून कर प्रसन्न होगी।

कहते हैं न कि कुदरत को भी शायद पसंद नहीं कि कोई कड़वी बोली बोले। इसलिए तो जुबान में उसने हड्डी नहीं दी। यद्यपि जुबान में एक भी हड्डी नहीं है, लेकिन अगर वह बिगड़ जाए तो सभी हड्डियां तुड़वा सकती है। इसलिए कम बोलो, काम का बोलो। इतना ही नहीं, दिल को ठंडक दे ऐसी बोली बोलो। मीठा बोलो। कड़वा बोलने के लिए तरुणसागर ही काफी हैं। आप कड़वा मत बोलो।

हाथ में 'टाइटन की घड़ी' हो तो दुनिया तुम्हारे आगे-पीछे घूमेगी। पर 'संकट की घड़ी' में तो केवल प्रभु ही आसरा होगा। ज़िंदगी में कभी संकट आए तो सहायता के लिए मित्र का द्वार भी मत खटखटाना, अपितु खटाखट प्रभु के द्वार चले आना, क्योंकि ये संसार बने-बने का है, बिगड़े में कोई किसी का नहीं होता। जब तक जीवन में हरियाली है, तभी तक दोस्त-यारी है। शाम ढलने पर तो चिड़िया भी घोंसले में छिप जाती है।

जैन दूसरी कौमों से ज्यादा सुखी और सम्पन्न हैं। क्यों? इसका जवाब है चूंकि यह कौम दुर्व्यसनों से दूर रहती है। इसलिए सुखी और सम्पन्न है। इस कौम को बचपन से ही सिखाया जाता है कि शराब ना पियें, मांस न खायें, बीड़ी-सिगरेट से दूर रहें, जुआ न खेलें, खान-पान में संयम बरतें। दुर्व्यसन न होने के कारण आर्थिक दृष्टि से सहज रूप से बड़ी बचत होती है और यही बचत उन्हें सुखी और सम्पन्न बनाती है।

मैं तुम्हारे मन के अनुकूल चिकनी-चुपड़ी बातें नहीं करता। मैं तो कड़वा सच बोलता हूं। सच तो कड़वा ही होता है। कड़वा बोलना मेरी प्रकृति नहीं, मेरी मजबूरी है। मेरे प्रवचन सुलाने वाली 'थपकी' नहीं वरन् जगाने वाले 'थप्पड़' हैं। नींद में सोए समाज को 'लोरी' सुनाकर नहीं जगाया जा सकता। कोई हित की कड़वी बात भी कह दे, तब भी सुन लो-ऐसा करने से वो भी खुश हो जायेगा और तुम्हारे जीवन में भी खुशियां आ जाएंगी।

आदमी अनावश्यक बोलता है और बेवजह झगड़ता है। बतौर उदाहरण : पति-पत्नी में बेटे को लेकर झगड़ा हो गया। पति कहता है : मैं बेटे को इंजीनियर बनाऊंगा। पत्नी कहती है : नहीं, मैं तो उसको डॉ. बनाऊंगी। दोनों जोर-जोर से झगड़ने लगे। इसी बीच पड़ोसी ने कहा : बेटे से तो पूछो आखिर वह क्या बनना चाहता है। यह सुनकर पति-पत्नी दोनों मुस्कुराए और बोले- बेटा तो अभी पैदा ही नहीं हुआ। हमारे 50 फीसदी झगड़े ऐसे ही बेबुनियाद होते हैं। सुखी जीवन का फॉर्मूला है- ‘कम बोलें, काम का बोलें’।

मुस्कुराहट दुनिया का सबसे बड़ा Invitation card है। किसी को अपना बनाना है तो मुस्कुराओ और किसी के अपने बनना है तो मुसकुराओ। मुस्कुराने का कोई side iffect नहीं होता। तुम्हें पता होना चाहिए कि मुस्कुराता हुआ बुड्ढा भी अच्छा लगता है और रोता हुआ बच्चा भी बुरा लगता है। एक मनुष्य ही है, जो मुस्कुरा सकता है। मैं पूछता हूं क्या तुमने कभी किसी जानवर को मुस्कुराते हुए देखा?

समय ने कैसी करवट ली? एक वक्त तब था जब घर में कोई कुत्ता न घुस आए, इसके लिए आदमी दरवाजे पर बैठता था और एक वक्त अब है कि घर में कोई आदमी न घुस आए, इसके लिए एक कुत्ता दरवाजे पर बैठता है। पहले जब घर में शादी-विवाह होता था, तब घर की महिलाएं खुद खाना बनाती थीं और भाड़े की महिलाएं नाचतीं थीं और अब भाड़े की महिलाएं खाना बनातीं हैं और घर की महिलाएं नाचतीं हैं।

आज के नेताओं को नेता मत कहो। ये तो भ्रष्टाचार के भूत हैं। नेता तो थे जवाहरलाल नेहरु, वल्लभभाई पटेल, लालबहादुर शास्त्री सरीखे महापुरुष। भ्रष्टाचार के भूत और चरित्रहीनता की चुड़ैल ने आज देश की दशा और दिशा दोनों ही बिगाड़ रखी है। भ्रष्टाचार के भूत बड़े खतरनाक हैं। इन ‘भूतों’ को ‘भभूत’ लगाने के लिए महात्मा गांधी जैसा कोई ‘अवधूत’ चाहिए।

राम और कृष्ण दोनों ही महापुरुष हैं, पर दोनों का दर्शन अलग-अलग है। राम कहके और श्रीकृष्ण करके समझाते हैं। राम ने जो किया वह तुम्हें करना और श्रीकृष्ण ने जो कहा वह तुम्हें करना, वरना सिर पर जूते पड़ेंगे। राम का जीवन और श्रीकृष्ण का कथन अनुकरणीय है। रामायण की सीता और महाभारत की गीता देश की संस्कृति है।

दुनिया में 5 काम बड़े कठिन हैं। एक, हाथी को धक्का देना। दो, जिराफ की गर्दन पकड़ना। तीन, मच्छर की मालिश करना। चार, चींटी की पप्पी लेना। पांच, शादी के बाद मुस्कुराना। चार बातें तो ठीक हैं। मगर पांचवीं बात शादी और हंसी का रिश्ता कैसा है? एक साथ हंसना और गाल फुलाने जैसा है। विदाई का वक्त था। दुल्हन रो रही थी और दुल्हा हंस रहा था। एक आखिरी बार रो रही थी, दूसरा आखिरी बार हंस रहा था।

आध्यात्मविदों ने माया को नर्तकी कहा। वह जीवात्मा को 84 लाख योनियों में नचाती है। गृहस्थों को काम-सुख में फंसाकर रखती है और संतों को कीर्ति में फंसाकर रखती है। इसके चंगुल से बचने का एक ही उपाय है। जब हम 'नर्तकी' शब्द को उलटते हैं 'कीर्तन' शब्द बनता है। मतलब साफ है भगवान के नाम का कीर्तन करो। नर्तकी तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकती।

एक बार संख्या 9 ने 8 को थप्पड़ मारा। 8 रोने लगा। पूछा : मुझे क्यों मारा? 9 बोला : मैं बड़ा हूं, इसलिए मारा। सुनते ही 8 ने 7 को मारा और 9 वाली बात दोहरा दी। फिर तो सिलसिला चल पड़ा। 7 ने 6 को, ... 2 ने 1 को। अब 1 किसको मारे? 1 के नीचे तो शून्य था। 1 ने उसे मारा नहीं बल्कि प्यार से उठाया और अपने बगल में बैठा लिया। ज्यों ही बगल में बैठाया 1 की ताकत 10 गुनी हो गई। क्षमा वीरस्य भूषणम्।

अपने अतीत और औकात को कभी मत भूलिये। कुछ लोग गुब्बारे की तरह होते हैं। गुब्बारा चंद सांसों में फूल जाता है। आदमी को भी जरा-सी शोहरत मिलती है और अपनी औकात भूल जाता है और हां! गुब्बारे में जरा-सी सुई चुभो दो तो फुस्स हो जाता है। ऐसे ही जो लोग उपलब्धियों पर गुरूर करते हैं। वे जरा-सा दुःख आने पर अकारण मरते हैं। उपलब्धियों का उत्सव तो मनाना, पर कभी अहंकार मत करना। दो, क्योंकि जो आप अपने हाथ से दोगे वही साथ में जायेगा। बैंक में रखा साथ नहीं जायेगा। दान कीजिए। पर हां! इतना भी दान मत दीजिए कि किराये के मकान में रहना पड़े और इतना संग्रह भी मत करिए कि नरक में जाना पड़े। 100 रुपये कमाते हो तो 5 रुपये का दान जरूर करो, क्योंकि धन की शुद्धि दान से होती है। पर सच्चाई देखिए, ज़िंदगी भर करता है 'धन'...'धन'... 'धन' और एक दिन हो जाता है 'निधन'।

बच्चों से : तुम्हारा जन्मदिन आए तो अपने पिता से गिफ्ट में सेलफोन नहीं मांगना, नई ड्रेस, ब्रेसलेट नहीं मांगना। बल्कि जब तुम्हारे पिता कहे कि बेटा बोल तुझे जन्मदिन में क्या चाहिए? तो मौके का फायदा उठाकर अपने डैडी से कहना कि पिताजी! बस आज से आप सिगरेट पीना छोड़ दो, बस यही मेरी गिफ्ट होगी। यह गिफ्ट तुम्हारे और तुम्हारे पिता के लिए यादगार बन जायेगी। आई लव यू एण्ड आई मिस यू पापा।

चार चोरों ने चार लाख रुपये चुराए। सोचा कुछ खा लें फिर बांटेंगे। दो भोजन लेने गये और दो रखवाली पर रहे। भोजन वालों ने सोचा भोजन में जहर मिला दें तो दोनों मर जायेंगे और हम दो-दो लाख बांट लेंगे। रखवाली वालों ने सोचा आते ही उन्हें गोली से उड़ा दे और हम दोनों दो-दो लाख बांट लेंगे। इधर जहर मिलाया और उधर गोली से उड़ाया। चारों मर गये। रुपये बोले : हम जहां भी गये उसी ने कहा रुपये मेरे हैं, पर हमने कभी नहीं कहा कि हम तेरे हैं।

दुःख कभी सूचना देकर नहीं आता। अतः दुःख के स्वागत के लिए तैयार रहो। याद रखना : पुण्य का उदय है तो वैभव बिना प्रयास के ही चला आता है और पापोदय आया तो सारा का सारा वैभव यूं ही चला जाता है। जब शरीर ही अपना नहीं है तो स्त्री-पुत्र, धन-वैभव अपना कैसे हो सकता है। अतः हर वक्त चलने की तैयारी रखो, न जाने कब क्या हो जाये? और दुनिया से चलना पड़ जाये।

इंसान को इंसान बना रहना है तो उसे हंसते रहना चाहिए। हंसी भगवान की देन है। चुटकुले हैं हंसने-हंसाने के लिए, कार्टून छपते हैं हंसने-हंसाने के लिए, लाफ्टर-शो आते हैं हंसने-हंसाने के लिए, कॉमेडियन होते हैं हंसने-हंसाने के लिए। मैं भी आपसे कहना चाहता हूं- आप भी हंसिए रोतों को हंसाने के लिए। हंसी और खुशी जीवन की असली संपदा है। ज़िंदगी तनाव में बीत रही है। तनाव की नाव से उतरिए और हंसी के हवाई जहाज में चढ़िए।

जमाना कैसा बदला है। जब आप छोटे थे तो बाहर जाने के लिए मां से कहते थे। मां! पिताजी से पूछो कि मैं बाहर जाऊं? और अब जमाना यह आ गया कि बाप बेटा से पूछते डरता है कि बेटा कहां जा रहे हो। कल तक बाप-बाप होता था और बेटा-बेटा और आज कहने को तो ये बाप हैं और ये इनका बेटा। पर सच्चाई यह है कि बेटा बाप होता है और बाप 'बेचारा'। किस्मत का मारा। ये कलयुग है भाई! यहां जो हो सो थोड़ा है।

लोग इतने गंभीर हो गये हैं कि हंसते भी ऐसे हैं जैसे किसी का कर्ज चुका रहे हों। आज-कल लोग किराये की हंसी से काम चला रहे हैं। आधुनिक विज्ञान कहता है : अकारण हंसना आरोग्य की कुंजी है। अगर लोगों के बीच का फासला कम करना है तो दिल खोलकर हंसिए। हंसना मनुष्य होने का सबूत है, क्योंकि पूरे अस्तित्व में सिर्फ मनुष्य ही हंस सकता है। ज़िंदगी में कभी कोई सुख आये तो हंस लेना और कभी दुःख आये तो उसे हंस कर उड़ा देना।

मुनिश्री तरुणसागर जी : एक सफर

जन्म : 26 जून 1967
गुहँची, जि.-दमोह (म.प्र.)

दीक्षा : 20 जुलाई 1988
बागीदौरा, जि.-बांसवाड़ा (राज.)

दीक्षागुरु : आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

- 13 वर्ष की उम्र में जैन-संन्यास।
- 20 वर्ष की उम्र में दिगम्बर मुनि दीक्षा।
- 33 वर्ष की उम्र में लाल किले से राष्ट्र को सम्बोधन।
- 35 वर्ष की उम्र में 'राष्ट्रसंत' की पदवी से नवाजे गए।
- 37 वर्ष की उम्र में गुरु-मंत्र दीक्षा देने की नई परम्परा की शुरुआत की।
- 38 वर्ष की उम्र में 'भारतीय सेना' को सम्बोधन व सेना द्वारा 'गार्ड ऑफ ऑनर' का सम्मान।
- 39 वर्ष की उम्र में राजभवन (बैंगलोर) में अतिविशिष्ट लोगों को सम्बोधन व श्रवणबेलगोला (कर्ना.) में अंतर्राष्ट्रीय भ. बाहुबली के महामस्तिकाभिषेक महोत्सव में प्रमुख वक्ता।
- 40 वर्ष की उम्र में अस्वस्थ होने पर भी (18 सितंबर 07 कोल्हापुर) मुनि पद पर बने रहने का ऐतिहासिक निर्णय।
- 43 वर्ष की उम्र में RSS के मुख्य पथ-संचलन (नागपुर) में सम्मिलित स्वयं सेवकों को सम्बोधन व मुख्यमंत्री निवास (रायपुर) पर प्रवचन।
- 44 वर्ष की उम्र में म.प्र. विधानसभा (27 जुलाई 2010) व म.प्र. के मुख्यमंत्री निवास (8 दिसंबर) पर सम्बोधन।
- 45 वर्ष की उम्र में 'गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' (2 अक्टूबर 2012, अहमदाबाद) एवं 'लिम्का बुक रिकॉर्ड्स' (28 अगस्त 2012) में नाम दर्ज।
- 46 वर्ष की उम्र में 2500 वर्ष के जैन इतिहास में पहली बार दिगम्बर व श्वेताम्बर मुनियों का संयुक्त चातुर्मास (जयपुर 2013)।
- 47 वर्ष की उम्र में 14 वर्ष पश्चात् दिल्ली आगमन पर डायमंड बुक्स द्वारा 14 भाषाओं में बहुचर्चित कृति 'कड़वे-प्रवचन' का प्रकाशन।